अमृत विचार

लोक दर्पण

रविवार, 29 जून 2025 www.amritvichar.com

मुरादाबाद को 'पीतल नगरी' के नाम से भी जाना जाता है, यह पश्चिमी उत्तर प्रदेश के मध्य में बसा शहर है। जो अपने उत्कृष्ट धातु शिल्प के लिए प्रसिद्ध है। प्रमुख निर्यात केंद्र के रूप में मुरादाबाद अपने पीतल के बर्तनों के उत्पादों के लिए दुनिया भर में लोकप्रिय है, यहां से निर्मित पीतल के उत्पाद भारत की संस्कृति, विरासत, इतिहास एवं विविधता को दर्शाते हैं। साथ ही उत्पादों की सजावट के लिए विभिन्न डिजाइनों एवं आकृतियों का इस्तेमाल होता है जिनकी प्रेरणा विभिन्न हिंदू देवी-देवताओं, मुग़ल काल की चित्रकारी इत्यादि से ली जाती है। यहां स्थित विभिन्न घरेलू इकाइयां एवं बड़े उद्योगों में धातु की वस्तुओं का उत्पादन होता हैं। हस्तशिल्प धातु वस्तुओं को धोने, आकार देने और चमकाने का काम घरेलू इकाइयों में होता है। धातु शिल्प अपनी उच्च गुणवत्ता, स्थायित्व, सौंदर्यपूर्ण डिजाइन और कुशल शिल्प कौशल के कारण बहुत मांग में है। डिजाइन क्षेत्र की समृद्ध संस्कृति, विरासत, इतिहास और विविधता को दर्शाते हैं। सदियों पुरानी विरासत के साथ, आज धातु शिल्प कौशल के एक गढ़ के रूप में उभर रहा है और जो विश्व बाजार का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर रहा है।

हस्तशिल्पियों के हाथ का जादू-पीतल पर नक्काशी

एक कालातीत लालित्य

मुरादाबाद में धातु शिल्प का निर्माण पीढ़ियों से होता आ रहा है। इसकी जड़ें मुगल काल में देखी जा सकती हैं, जब कुशल कारीगरों को शाही दरबार द्वारा भव्य कलाकृतियां बनाने के लिए संरक्षण दिया जाता था। वर्षों से यह शिल्प विकसित हुआ है, जिसमें स्वदेशी तकनीकों को आधुनिक संवेदनाओं के साथ मिलाकर एक विशिष्ट शैली बनाई गई है जो इस क्षेत्र का प्रतीक है। पीतल, तांबा, एल्युमिनियम और कांस्य जैसी धातुएं स्थानीय रूप से प्राप्त की जाती हैं और उन्हें कला के लुभावने कामों में ढाला जाता है। कारीगर धातु की इन चादरों में जान डालने के लिए ढलाई, उभार और उत्कीर्णन जैसी कई तकनीकों का उपयोग करते हैं। धातु के एक साधारण टुकड़े से बनाए गए डिज़ाइन, आकार और उत्पादों को देखना वाकई मंत्रमुग्ध कर देने वाला है। शानदार डिज़ाइन और उनकी शानदार डिटेलिंग किसी को भी अवाक कर सकती है। कारीगरों को काम करते हुए देखना एक दिलचस्प अनुभव हो सकता है।

चमकदार विरासत

मुरादाबाद का धातु शिल्प रचनात्मकता की अभिव्यक्ति से कहीं अधिक है, यह सदियों पुरानी परंपरा का प्रतीक है। सदियों से इस शिल्प को निखारा गया है और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित किया गया है। मुगल प्रभाव से लेकर पांरपरिक और यहां तक कि समकालीन पैटर्न तक के रूपांकनों के साथ वर्षों से डिजाइन विकसित हुए हैं। आज बनाए जा रहे उत्पादों की विविधता और प्रकार को देखना आश्चर्यजनक है। चाहे वह मोमबत्ती धारक हो, फूलदान हो, मूर्ति हो या कटोरा या ट्रे जैसी कोई साधारण उपयोगी वस्तु हो, प्रत्येक टुकड़ा कारीगर के कौशल की अचूक पहचान रखता है। जर्मनी, फ्रांस, इटली और मध्य पूर्व जैसे विदेशी बाजारों में ज्यादातर निर्यात किया जाता है, यह स्थानीय अर्थव्यवस्था में मुख्य योगदानकर्ता है, जो हजारों लोगों को रोजगार प्रदान करता है।

खरीदारों का स्वर्ग

मुरादाबाद का धातु शिल्प केवल एक आर्थिक गतिविधि नहीं है, बल्कि यह अपने कारीगरों की कला, रचनात्मकता, कौशल और सरलता का जीवंत प्रमाण है। जैसे-जैसे शहर आधुनिकता की धाराओं में बह रहा है, इस अमूल्य विरासत को संजोना और संरक्षित करना दोनों ही आवश्यक है। स्थानीय कारीगरों से खरीदारी करने से क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलता है और इस शिल्प के निर्माण में कार्यरत अनगिनत परिवारों की आजीविका का समर्थन होता है। पर्यटकों के लिए एक आदर्श खरीदारी गंतव्य, स्थानीय बाजार विभिन्न प्रकार की धातु शिल्प वस्तुओं से भरे हुए हैं। कलाकृतियां घर की सजावट के सामान के साथ-साथ अद्वितीय स्मृति चिन्ह और उपहार के लिए भी उपयुक्त हैं। छोटी-छोटी चीज़ों से लेकर भव्य सजावटी वस्तुओं तक, आप कई तरह की वस्तुओं में से चुन सकते हैं।

दुनिया में छाया मुरादाबाद का हस्तशिल्प उद्योग

मुरादाबाद में पीतल का काम सदियों पुराना है, और यह माना जाता है कि मुगल शासकों के समय से ही यहां पीतल के बर्तन बनाए जा रहे हैं। मुगल शासक सजावट के शौकीन थे और उन्होंने पीतल के काम को प्रोत्साहित किया। 18वीं शताब्दी में, ब्रिटिश शासन के दौरान, पीतल के बर्तनों का निर्यात शुरू हुआ और मुरादाबाद का पीतल उद्योग फला-फूला।

दुनिया भर में मुरादाबाद के पीतल के काम के लिए प्रसिद्ध है। कुशल कारीगरों द्वारा बनाए गए हस्तशिल्प आधुनिक, आकर्षक और कलात्मक पीतल के बर्तन, आभूषण और ट्राफियां मुख्य शिल्प हैं। आकर्षक पीतल के बर्तन अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा, जर्मनी और मध्य पूर्व एशिया जैसे देशों में निर्यात किए जाते हैं। विदेशी खरीदारों की जरूरत के अनुसार आयरन शीट मेटलवेयर, एल्युमिनियम आर्टवर्क और ग्लासवेयर जैसे अन्य उत्पाद भी शामिल किए गए हैं। पीतल उत्पाद विदेशी बाजार में बहुत लोकप्रिय हैं और हर साल हजारों करोड़ में निर्यात किया जा रहा है। विदेशों में विशेष रूप से निर्यात और लोकप्रियता में वृद्धि के कारण, बड़ी संख्या में निर्यातक अपनी इकाइयां स्थापित कर रहे हैं और अपना निर्यात के लिए निर्माण कर रहे हैं।

गुरु दिलशाद हुसैन और बाबूराम यादव को मिल चुका है पद्मश्री अवार्ड

पीतल पर नक्काशी के लिए हस्तशिल्प गुरु दिलशाद हुसैन और बाबूराम यादव पद्मश्री अवार्ड से सम्मानित हो चुके हैं। दोनों की कारीगरी के देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी कायल हैं। इसके अलावा मुरादाबाद के अन्य पीतल कारीगर भी पीतल के आइटम तैयार कर देश में पीतल नगरी का लोहा मनवा चुके हैं।

देश दुनिया के हर कोने में पहुंचता है पीतल नगरी का उत्पाद

हस्तशिल्प निर्यात के क्षेत्र में मुरादाबाद विश्व का बड़ा हब है। यहां से 10 हजार करोड़ रुपये का निर्यात विश्व के प्रमुख देशों यूएसए, यूके सहित अन्य बड़े देशों को होता है। भारत से कुल होने वाले निर्यात में मुरादाबाद के हस्तशिल्प की 40 प्रतिशत की हिस्सेदारी है। स्पष्ट है कि वैश्विक बाजार में भारत की धमक में पीतलनगरी के निर्यातक प्रमुख स्तंभ हैं। पीतलनगरी के नाम से विख्यात मुरादाबाद में हस्तशिल्प कारीगरी का उत्कृष्ट व नायाब भंडार है। यूनाइटेड किंगडम, यूएसए के अलावा मिडिल ईस्ट के कई देशों में यहां के उत्पादों की बहुत मांग है। ईपीसीएच की ओर से आयोजित कई ट्रेड फेयर में यहां के हस्तशिल्प उत्पादों पर की गई उत्कृष्ट नक्काशी और डिजाइन ने कई बड़े देशों के खरीदारों को आकर्षित कर चुका है।

बढ़ते कदम पर चुनौतियों का साया

हस्तशिल्प निर्यात के क्षेत्र में विश्व के बाजार में मुरादाबाद के बढ़ते कदम पर चुनौतियां भी कम नहीं हैं। कभी कोविड संक्रमण, तो कभी रूस यूक्रेन वॉर, ईरान-इजराइल के बीच युद्ध ने निर्यातकों को मुश्किल में डाल दिया। बाहर से आर्डर में कमी आई है। लेकिन फिर भी यहां के निर्यातक व हस्तशिल्प के कारोबारी पूरे जोश से आगे बढ़ने के लिए तैयार हैं। उन्हें सरकार से समर्थन और सहयोग मिले तो वह अपनी साख को और मजबूती दे सकेंगे।

सरकार से मिले सहयोग तो 3-4 गुना हो सकता है निर्यात

वर्तमान दौर में बाजार के वैश्विक प्रतिस्पर्धा में निर्यातकों को सरकार से सहयोग की आशा है। ऐसा होना पर मुरादाबाद का निर्यात 3-4 गुना हो सकता है। इसके लिए विभिन्न फोरम पर हम अपनी बात रख चुके हैं। वैश्विक स्पर्धा में निर्यातक सरकार से चाहते हैं कि इंट्रेस्ट सब्सिडी को फिर से आरंभ किया जाए।
रोड टेप की दरों को बढ़ाने की आवश्यकता, सिंगल विंडो द्वारा कार्य होना, इंडस्ट्रियल एरिया व आर्टिजन पार्क की आवश्यकता है।

-अवधेश अग्रवाल
मुख्य संयोजक, ईपीसीएच इंडिया

निर्यात पर पड़ा युद्ध का असर, निर्यातक परेशान

ईरान, इजराइल और अमेरिका के बीच युद्ध का सीधा असर पीतल नगरी के निर्यातकों पर भी पड़ा है। शिपिंग कंपनियों द्वारा युद्ध सरचार्ज लगाया जा रहा है, जिससे निर्यातकों को प्रति कंटेनर 15 से 50 हजार रुपये अतिरिक्त बोझ झेलना पड़ेगा। ईरान-इजराइल व अमेरिका में युद्ध से शिपिंग कंपनियां युद्ध सरचार्ज लगा रही हैं। वहीं ईरान-इजराइल ने संकेत दिया था कि उनका हवाई युद्ध कम से कम फिलहाल के लिए समाप्त हो गया, जिससे महानगर के निर्यातकों ने राहत की सांस ली है।

लेकिन अगर हालात जल्द नहीं सुधरे तो निर्यात ऑर्डरों में 40 प्रतिशत तक गिरावट आ जाएगी। वहीं मालभाड़े में उछाल और बीमा लागत में तीन से पांच गुना वृद्धि होने के आसार हैं। निर्यातकों का मानना है कि भुगतान, माल की सुरक्षा और डिलीवरी की अनिश्चितताओं के कारण कई ग्राहकों ने ऑर्डर रोक दिए हैं। वहीं कुछ ने नए ऑर्डर से दूरी बना ली है। यह स्थिति बनी रही तो अगले तीन महीनों में ऑर्डर 40 प्रतिशत तक कम हो सकते हैं। निर्यातकों मानते हैं कि मुरादाबाद से इजराइल को 600 करोड़ का सालाना निर्यात होता है। जबकि ईरान खाड़ी के अन्य देशों के जरिए मुरादाबाद का माल खरीदता है। ऐसे में निर्यातकों को भारी नुकसान झेलना पड़ रहा है।

कच्चे तेल की कीमतें बढ़ने से निर्यातकों पर बढ़ा बोझ

युद्ध के बीच कच्चे तेल की कीमतें बढ़ने से निर्यातकों पर आर्थिक बोझ बढ़ा है। कच्चे तेल की कीमतों के कारण शिपिंग की लागत बढ़ गई है। सरकार द्वारा निर्धारित रोडटेप की दरें सीमित हैं। इन मुद्दों को लेकर दो दिन पूर्व डायरेक्टर जनरल ऑफ फॉरेन ट्रेड ने पीतलनगरी के निर्यातकों के साथ ऑनलाइन बैठक भी की थी।

युद्ध का सीधा असर निर्यात पर दिख रहा है। इजराइल के कई ग्राहकों ने ऑर्डर रोकने के लिए कह दिया है। नए ऑर्डर भी नहीं मिल रहे हैं। जिससे निर्यातकों का बड़ा नुकसान होगा।
- नवेदुर्रहमान
अध्यक्ष, डीक्राफ्ट एक्सपोर्टर्स एसोसिएशन

इजराइल-ईरान युद्ध का असर समुद्री मार्गों पर पड़ा है। शिपिंग कंपनियों द्वारा सरचार्ज लगाया जा रहा है। जिससे निर्यातकों को काफी नुकसान हुआ है।
- जेपी सिंह
चेयरमैन यस

निर्यातकों को युद्ध ने भारी नुकसान दिया है। युद्ध की वजह से पीतलनगरी के निर्यात पर लगभग 700 करोड़ का सीधा प्रभाव पड़ेगा। सजावट, रेस्टोरेंट, कटलरी, होम डोकोर समेत अन्य आईटम इजराइल जाते है।
-नवेद खान, निर्यातक

युद्ध का सीधा असर निर्यातकों पर पड़ा है। कई ग्राहकों ने युद्ध की वजह से ऑर्डर रोक दिए है। जिससे निर्यातकों को भारी नुकसान हुआ है। ईरान व इजराइल में भारी संख्या में पीतल के आईटम जाते है।
-आकांक्षा, निर्यातक

हैंडीक्राफ्ट में टेबल, गार्डन डिकोर के उत्पादों का बड़ा बाजार

वैश्विक बाजार में मुरादाबाद के पीतल के कारोबार की चमक यूं ही नहीं है। यहां के उत्पादों की गुणवत्ता व बेहतरीन हस्तशिल्प की कलाकारी के कई देशों के लोग मुरीद हैं। हैंडीक्राफ्ट में टेबल से लेकर गार्डन डिकोर के उत्पादों का बड़ा वैश्विक बाजार है। खासकर यूरोप, यूके, रूस व अन्य कई बड़े बाजार में पीतलनगरी के उत्पादों की मांग हमेशा से बरकरार है। मुरादाबाद के ब्रास इंडस्ट्री की साख बहुत पुरानी है। यहां के हैंडीक्राफ्ट उत्पादों पर की गई डिजाइन व नक्काशी का पूरे विश्व में कोई मुकाबला नहीं है। कभी पीतल के परंपरागत बर्तनों की मांग अधिक रही। बदलते परिदृश्य में डेकोरेशन उत्पादों की मांग ने बाजार को नई दिशा दी। इसके अनुरुप पीतलनगरी के निर्यातक व ब्रास से संबंधित औद्योगिक इकाइयों ने भी अपने को ढाल लिया। हैंडीक्राफ्ट में टेबल से लेकर गार्डन डिकोर के उत्पादों की मांग खूब रही और आज भी इसे पंसद करने वालों की कमी नहीं है।

कोविड और युद्ध के बीच बड़ी चपत

कोविड 19 की मार से मुरादाबाद के निर्यातक व उद्यमियों की भी कमर टूट गई थी। संक्रमण काल में कारोबार ठप रहा। औद्योगिक विकास की तेज गति पर अचानक ब्रेक लग गया। लोग जीवन बचाने की जद्दोजहद कर रहे थे। व्यापारी वर्ग पूरी तरह निराश व हताश हो गया। स्थितियों में सुधार आया तो लगा कि अब बाजार बूम करेगा लेकिन रूस-यूक्रेन वार लंबा खिंचने के साथ ही ईरान-इजराइल के बीच चल रही लड़ाई ने निर्यातकों को काफी नुकसान पहुंचाया है।

मनीष अग्रवाल
इंटनेशनल ब्रास कलेक्शन, मुरादाबाद

स्थानीय चुनौतियां भी भारी

ब्रास से जुड़े लगभग हर कारोबारी को वैश्विक से लेकर स्थानीय चुनौतियों से भी जूझना पड़ रहा है। हाउस टैक्स के मनमाने निर्धारण सहित अन्य समस्याओं को निर्यातकों ने विभिन्न फोरम पर उठाया है। जिससे इसका उचित समाधान हो सके। क्योंकि इससे कारोबार पर विपरीत प्रभाव भी पड़ता है।

लोकसभा अध्यक्ष के संबल से मिली नई ऊर्जा

25 जून को मुरादाबाद में निर्यातकों के साथ सेमिनार में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने मुरादाबाद को डिजाइन के क्षेत्र में वैश्विक हब बनाने सहित अन्य कई नए रास्ते की ओर बढ़ने की दिशा दी है इससे निर्यातकों, उद्यमियों को संबल और नई ऊर्जा मिली है। डिजाइन के मामले में स्कोप बहुत है। लोकसभा अध्यक्ष ने स्वयं इस दिशा में सरकार के स्तर से पूरा सहयोग दिलाने का जो भरोसा दिलाया है इससे निश्चित तौर पर आने वाला दौर और बेहतर होगा। इंडस्ट्री को नई ऊंचाई मिलेगी।

विदेशों में बढ़ी डिजाइनर ठेले की मांग

भारत के छोटे बड़े शहरों में सड़क किनारे ठेले पर लगने वाले कारोबार विदेशों में भी है। इसे नए स्वरुप में मुरादाबाद पेश कर रहा है। इंटनेशनल ब्रास कलेक्शन में ठेले की नई डिजाइनिंग कर एक्सपोर्ट किया जा रहा है। इसकी फिनिशिंग और पैकेजिंग कराई जा रही है। इसकी लागत 8 से 10,000 रुपये है। जर्मनी और यूके में इसकी मांग अधिक है।

जन्म शताब्दी वर्ष

प्रगतिशील धारा के कथाकार अमरकांत

अमरकांत स्वातंत्र्योत्तर भारत के हिन्दी के एक शिखर और प्रतिनिधि कथाकार थे। वे नई कहानी आंदोलन की प्रगतिशील धारा की एक प्रमुख त्रयी में भी शामिल माने जाते थे। एक ओर कमलेश्वर, मोहन राकेश और राजेंद्र यादव की त्रयी नई कहानी के नाम पर प्रसिद्ध है तो दूसरी ओर अमरकांत, मार्कण्डेय और शेखर जोशी की त्रयी भी अपनी पहचान रखती है। अब इनमें से कोई भी जीवित नहीं बचा है। दरअसल अमरकांत हिंदी कथा साहित्य की यथार्थवादी धारा को ही विकसित करते हुए उसे एक कलात्मक ऊंचाई पर ले जाते हैं। हिंदी कहानी की यथार्थवादी धारा के सूत्रधार प्रेमचंद माने जाते हैं। यह धारा हिंदी कहानी में यशपाल, रांगेय राघव, भैरव प्रसाद गुप्त, राहुल सांकृत्यायन, उपेन्द्र नाथ अश्क से होती हुई अमरकांत की पीढ़ी तक आती है। देश की स्वतंत्रता के बाद छोटे शहरों और कस्बों में जो मध्य और निम्न मध्यवर्ग सामने आता है, अमरकांत उसकी पहली शिनाख़्त करते हैं, अपनी कहानियों के जरिये। वे इस वर्ग के जीवन की गहरी विडंबनाओं, अभावों, संघर्षों, उसके स्वप्न और स्वप्न भंग को भी व्यंग्य के धरातल पर प्रस्तुत करते हैं। अमरकांत इस मध्यवर्ग के दायरे के बाहर भी निकलते हैं और निम्नवर्गीय अभाव से जूझते अपने वजूद के लिए आख़िरी दम तक लड़ते पात्रों के निर्मम, क्रूर जीवन सन्दर्भों को, उनकी विडम्बनाजन्य स्थितियों को भी अपनी कहानियों में अद्भुत मार्मिकता के साथ प्रस्तुत करते हैं। उनकी कहानियों में सादगी और सपाटता के बावजूद कलात्मक उत्कर्ष भी देखने को मिलता है। 'हत्यारे', 'डिप्टी कलक्ट्री', 'दोपहर का भोजन', 'ज़िन्दगी और जोंक', 'एक धनी व्यक्ति का बयान', 'इंटरव्यू', 'जन्म कुंडली', 'बहादुर', 'बौरैया कोदो' आदि कहानियां हिंदी कहानी यात्रा में मील के पत्थर के समान हैं। ये यादगार कहानियां हैं। अमरकांत ने कहानियों के साथ-साथ कई उपन्यासों की भी रचना की है। 'सूखा पत्ता', 'सुन्नर पाण्डे की पतोहू', 'इन्हीं हथियारों से', 'बीच की दीवार', 'ग्राम सेविका' आदि उनके प्रमुख उपन्यास हैं। अमरकांत की कहानियों और उपन्यासों में स्वातंत्र्योत्तर भारत के, विशेषकर पूर्वी उत्तरप्रदेश के सामाजिक जीवन का यथार्थ अपनी समग्रता में अभिव्यक्त हुआ है। अमरकांत ने मध्य और निम्नमध्य वर्ग के ढोंग और दिखावे को भी निशाना बनाया है।

चंद्रेश्वर
सेवानिवृत्त प्रोफेसर,लखनऊ

अमरकांत पूर्वी उत्तरप्रदेश के बलिया जनपद के नगरा गांव में 1 जुलाई 1925 को पैदा हुए थे। उन्होंने अपनी किशोरावस्था में 1942 के 'भारत छोड़ो आंदोलन' में भी हिस्सा लिया था। उनकी मानसिक बनावट और बुनावट, सोच और चिंतन प्रणाली पर 1942 के 'भारत छोड़ो आंदोलन' का गहरा प्रभाव पड़ा था। उनका उपन्यास 'इन्हीं हथियारों से' 1942 के स्वतंत्रता आंदोलन के समय और 'भारत छोड़ो आंदोलन' की पृष्ठभूमि पर ही रचा गया है। यह एक विस्तृत फलक वाला महाकाव्यात्मक उपन्यास है। इस उपन्यास में उन्होंने बलिया जनपद के आसपास के तत्कालीन माहौल को, 'भारत छोड़ो आंदोलन' में वहां की जनभागीदारी को और गांधी जी के प्रभाव को पुरज़ोर तरीके से प्रस्तुत किया है। अगर आज़ादी के बाद ही हिंदी कहानी और हिंदी उपन्यास पर निगाह ले जायें तो 2-3 बड़े गद्यकार और कथाकार सामने आते हैं, उनमें फणीश्वर नाथ रेणु, हरिशंकर परसाई के साथ-साथ अमरकांत भी हैं। एक तरह से कहा जाये तो आज़ादी के बाद के हिंदी के सर्जनात्मक गद्य की त्रयी इन्हीं से बनती है। अमरकांत का लेखन स्वतंत्रता के बाद से आजतक जारी रहा है। यह एक लम्बा काल खंड है, कोई 60-65 वर्षों का। अमरकांत अपने जीवन के 89 वें साल में दाखिल हो गए थे। वे निरंतर लेखन के मोर्चे पर सक्रिय थे। पिछले वर्षों में मृत्यु से कुछ पहले उनको हिंदी का सर्वोच्च पुरस्कार ज्ञानपीठ पुरस्कार भी मिला था। उनका होना समकालीन कथासाहित्य के लिए और पूरे हिंदी साहित्य के लिए भी गौरव की बात थी। वे एक ऐसे प्रवंचना और छल-छद्म से भरे हिंदी समय में हमारे बीच से चले गए जब उनकी लेखकीय सक्रियता हम सबको अब भी आश्वस्त करती थी। वे अपने जीवनकाल में हीं हिंदी के किंवदंती पुरुष बन गए थे। उनकी साहित्यिक कर्मस्थली इलाहाबाद थी। उनसे वर्ष 1981-1986 के दौरान तीन -चार बार इलाहाबाद (अब प्रयागराज) में मिलने का सौभाग्य मुझे भी मिला था। मैं पहली बार वर्ष 1981 में हिन्दी के प्रख्यात कथाकार मिथिलेश्वर के साथ इलाहाबाद गया था। मिथिलेश्वर उस समय के सुचर्चित युवा कथाकार थे और आरा शहर में रहते थे। काफी प्रसिद्ध होने के बाद भी वे बेरोज़गार थे। किसी इंटरव्यू के सिलसिले में उनका इलाहाबाद जाना हुआ था। मैं भी तबतक कुछ लिखने लगा था और मिथिलेश्वर जी के संपर्क में था। मैं आरा जैन कालेज में ही स्नातक,हिन्दी (प्रतिष्ठा) का विद्यार्थी था। वे मेरे अग्रज की तरह थे। हमलोग कथाकार अमरकांत से उनके ऑफिस में मिले थे। वे उन दिनों एक हिन्दी की मासिक पत्रिका 'मनोरमा' के संपादन से जुड़े हुए थे। उनसे मिलने पर यह एहसास ही नहीं हुआ था कि वे इतने महान लेखक हैं। उनकी बातचीत में बहुत सरलता थी और व्यवहार में सादगी। बाद में मैं अपने समकालीन कवि मित्र बद्रीनारायण के साथ भी उनसे एक -दो बार उनके आवास पर मिला था। बद्रीनारायण उन दिनों इलाहाबाद विश्वविद्यालय के विद्यार्थी थे और अब गोविंद वल्लभ पंत समाज वैज्ञानिक शोध संस्थान में इतिहास के प्रोफ़ेसर और निदेशक हैं। बहरहाल, कालजयी एवं महान कथाशिल्पी अमरकांत की स्मृति को हमारा शत-शत नमन।

कविताएं/गीत

दोस्तों से मुलाक़ातें

किताबों के पन्नों में सूखे गुलाब
और अलमारी में मिले पुराने
नोट की तरह,
कभी खो गई थी जो उस बाली
की तरह,
थक गए थे जिसे ढूंढ़ते-ढूंढ़ते
पुरानी पसंदीदा साड़ी की
तरह,
वापस जाना बचपन के
गलियारों में,
यादों की रिक्शा पकड़कर
और फिर खिलखिला के
हंस देना
जब तक आंसू ना आ जाएं,
जिम्मेदारियों के बोझ से
लक दक इन आंखों में।
छोड़ कर सारे रंज ओ गम,
और खोल कर मशरूफ़ियत
के दरवाज़े,
उम्र की ढलान पर जब साथ
नहीं देती
अपने ही जिस्म की सरहदें
बड़ा सुकून देती है
दोस्तों से मुलाक़ातें ॥
वह जोड़ता मोटर!
मैकेनिक के रूप में
देखा उसे मैंने
अपने घर की छत पर।
गर्म उमस से भरी
भादो की एक दोपहर।

बीना जोशी हर्षिता
लेखिका, नैनीताल

पहचान

जगत नियंता के नाटक में
मुझमें, तुझमें, सबमें है वह,
पर सबके महिमान अलग हैं।

पंच तत्व से देह बनाया,
हम सब के परिधान अलग हैं।

एक पिता के पुत्र अनेकों,
उनके पर गुणगान अलग हैं।

जन्म मृत्यु की लिखापढ़ी में,
सबके पूर्ण विराम अलग हैं।

सर्वेश्वर की सृष्टि निराली,
रुप अलग है नाम अलग है।

जीव भटकता कई योनि में,
सबके पर अभियान अलग हैं।

जीवन के इस लक्ष्य भेद में,
सबके शर संधान अलग हैं।

जगत नियंता के नाटक में,
हम सबकी पहचान अलग हैं।

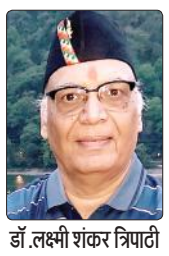

डॉ .लक्ष्मी शंकर त्रिपाठी
कानपुर

वेदनाएं

वेदनाएं कभी ख़त्म ग़र हो गईं
सच कहूं प्रेम दिल ना निभा
पाएगा।
एक तरफा प्रतीक्षा हो यदि
प्रेम में,
अंतत : एक दिन प्रेम
कुम्हलाएगा।।

दिव्यता भव्यता और सम्पन्नता
खींचते हैं सभी को ये सच है
मगर,
हर चमकती हुई चीज़ हीरा
नहीं
जान पाओगे तुम जानना हो
अगर,
हो निरादर जहां मान सम्मान
का
उस जगह स्वाभिमानी नहीं
जाएगा।

हाथ पर हाथ रखकर थी खाई
कसम
छूटते हाथ बातें पुरानी हुई,
साथ में जिनके लम्हें गुजारे
सदा
छोड़कर यूं अचानक कहीं
खो गई,
सीख है दिल लगाना जरा
ग़ौर से
वरना मेरी तरह चोट ही
खाएगा।

लक्ष्य जीवन का हो भिन्न पर
सोचना
कर भला हो भला हर एक
इंसान का,
रक्त है एक ही इन रगों में भरा
करना हिस्सा भला अब क्यूं
भगवान का,
पीढ़ियों ने सहा दर्द अलगाव
का
लो कसम दर्द अब ना कोई
गाएगा।

बात अपनी न हो तो बड़े
शौक़ से
बात करते उसूलों की थकते
नहीं,
लाख कमियां हैं खुद में भी तो
बेशरम
उंगलियां आगे करने से रुकते
नहीं,
ऐसे आडंबरी आगे बढ़ते रहे
एक दिन झूठ सच को ही
झुठलाएगा।

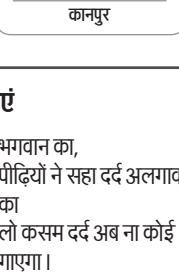

प्रदीप बहराइची
बहराइच

कहानी

धर्म पथ

नित्य की भांति शिष्य गण प्रातः काल से ही मंदिर प्रांगण की सफाई में लगे थे। वे जानते थे कि स्वामी जी का प्रवचन तो अपराह्न तीन बजे से प्रारंभ होगा मगर श्रद्धालु श्रोताओं का आना एक बजे से ही प्रारंभ हो जायेगा। इसीलिए उन्होंने बारह बजे तक प्रांगण की सफाई करके दरियां बिछा दी थीं। तीन बजे जब स्वामी जी अपनी कुटिया से बाहर निकले तो भक्तों ने शंख बजा कर उनका स्वागत किया। स्वामी जी व्यास गद्दी की ओर बढ़े तभी एक व्यक्ति उनके सामने आ गया और हाथ जोड़ कर बोला-"मैं अपने कृत्य पर बहुत शर्मिंदा हूं राकेश। मेरे कारण तुम घर से बेघर हो गए। मुझे क्षमा कर दो और वापस घर लौट चलो। "उस व्यक्ति की बात सुनकर स्वामी जी बोले- "ईश्वर जो करते हैं, अच्छा ही करते हैं। मुझे माया-मोह के बंधन से निकल कर धर्म के मार्ग को अपनाने में तुम्हारी महत्वपूर्ण भूमिका रही है, इसलिए मैं हृदय से तुम्हारा आभारी हूं।...अब प्रभु के चरणों की छाया त्याग कर पुनः उस नर्क में जाने का प्रश्न ही नहीं उठता। मुझे तुमसे या किसी अन्य व्यक्ति से कोई शिकायत नहीं है।"

डॉ. मृदुल शर्मा
लखनऊ

यह सुनकर उस व्यक्ति ने स्वामी जी के पैर पकड़ लिए और रोते हुए बोला-"नहीं राकेश, मैं तुम्हें लेकर ही वापस जाऊंगा। मैं तुम्हारा बड़ा भाई होकर भी तुम्हारे पैर छूकर घर वापस लौट चलने की विनती कर रहा हूं।"

"हठ मत करो भाई। अब यह संभव नहीं है।" "नहीं राकेश। मरते समय चाची ने मुझे श्राप दिया था कि दिनेश, तुम्हें भी मेरी तरह संतान के दुख में तड़प तड़प कर मरना पड़ेगा। तुम जीवन में कभी चैन से नहीं रह सकोगे।.... उनके श्राप के प्रभाव को कम करने के लिए और चाची की आत्मा की शांति हेतु मैं आज तुम्हें अवश्य वापस ले जाऊंगा।" "अब इन सब बातों का मेरे लिए कोई अर्थ नहीं है। मेरा समय बर्बाद मत करो।"- यह कहते हुए स्वामी जी व्यास गद्दी पर बैठ गए।

स्वामी जी ने शांत भाव से अपना प्रवचन प्रारंभ किया और लगभग दो घंटे तक श्रोतागण मंत्रमुग्ध हो कर उनका प्रवचन सुनते रहे। प्रवचन समाप्त होने पर एक श्रद्धालु हाथ जोड़कर बोला-"स्वामी जी, हम आपके अतीत के विषय में और आज आपको लेने आए व्यक्ति के विषय में जानना चाहते हैं।"

स्वामी जी ने पहले तो इस प्रश्न को टालना चाहा परन्तु अन्य लोगों के आग्रह करने पर हंस कर बोले- "यह व्यक्ति जो आज मुझे लेने आए थे, मेरे ताऊ जी के पुत्र हैं। मेरे पिता जी दो भाई थे। ताऊ जी का मस्तिष्क अविकसित था। अतः मेरे पिताजी ही गृहस्थी के मुखिया थे। ताऊ जी केवल पशुओं की देखभाल करते थे। उनके एक पुत्र और चार पुत्रियां थीं। घर का मुखिया होने के कारण मेरे पिता ने ही अपने बड़े भाई की चारों संतानों, मुझे और मेरी बहन की शिक्षा और विवाह आदि दायित्वों का निर्वहन किया।

ताऊ जी और पिताजी की मृत्यु के बाद ताऊजी के पुत्र दिनेश (जो आज मुझे लेने आए थे) ने घर के मुखिया की जिम्मेदारी संभाली। मैं उस समय नासमझ बालक था। इनके मन में खोट था। इन्होंने चकबंदी के समय अच्छे और सड़क के किनारे के खेत सरकारी कर्मचारियों से मिल कर अपने नाम करा लिए और अपेक्षाकृत कमजोर तथा कम कीमत के खेत मेरे नाम करा दिए। मेरी माता ने इसका विरोध किया मगर इन्होंने उनकी बात को अनसुना कर दिया। जब मैं समझदार हुआ तो उनकी इस बेईमानी को लेकर मैंने विरोध किया। धीरे-धीरे हमारे बीच झगड़ा और वैमनस्य बढ़ता ही गया।

एक दिन शाम को हम दोनों में बहुत कहा सुनी हुई। मैंने क्रोध वश इनसे कहा कि इन खेतों के बदले में तुम्हें अपनी जिंदगी गंवानी पड़ेगी। इस घटना के कुछ दिन बाद एक दिन भोर में रक्त से सने इनके जूते, टोपी और गमछा नदी किनारे पड़े मिले। यह देख कर लोगों ने यह अनुमान लगाया कि इनकी हत्या करके लाश को नदी में वहा दिया गया है। मुझ पर इनकी हत्या का आरोप भी लोगों ने लगाया। मैंने यह सुना तो बुरी तरह से डर गया और बिना किसी से कुछ कहे घर से भाग गया। लगातार फरारी जीवन बिताते हुए मैं भिक्षा मांग कर खाने को विवश था। केश बढ़ जाने पर अपनी पहचान छिपाने के लिए मैंने संन्यासी का वेश धारण कर लिया।

साधु वेश में भिक्षा मांग कर जीवन व्यतीत करते हुए मन में विचार आया कि सच्चा संन्यासी दिखने के लिए मुझे शास्त्रों का अध्ययन करना चाहिए। मैंने काशी में श्रद्धेय स्वामी परमानंद से दीक्षा ली। उन्होंने ही मुझे सदानंद नाम दिया। उनके सानिध्य में तीन वर्ष रह कर मैंने वेदों, पुराणों और अन्य धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन किया। प्रारंभ में जीवन बहुत कष्टमय बीता। कई बार भूखे पेट ही रहना पड़ा मगर सच्चे मन से प्रभु स्मरण करने से ईश्वर की ऐसी कृपा हुई कि खाने-पीने की समस्या समाप्त हो गई। और ईश्वर भक्ति में आनन्द मिलने लगा। अब तो आप लोग देख ही रहे हैं कि सब प्रकार से जीवन आनंदमय है। शिष्य गण श्रद्धाभाव से पुत्र से भी अधिक सेवा करने को तत्पर रहते हैं।" जब स्वामी जी अपनी राम कहानी कह कर चुप हुए तो उनके एक शिष्य ने पूछा -"आप कभी वापस अपने गांव नहीं गये?" "गया था। मगर गांव तक पहुंचता, उससे पहले ही मृत घोषित किए गए भाई के जीवित लौट आने, माता के दिवंगत होने और मेरे बहन-बहनोई के मेरी सम्पत्ति के लिए मेरे ही गांव में बस जाने की जानकारी होने पर मैं गांव की सीमा छुए बिना ही वापस लौट आया।... मनुष्य योनि बड़े भाग्य से मिलती है। इसे माया-मोह में गंवाने से मैं बच गया। प्रभु ने कृपा पूर्वक अपने चरणों में स्थान दे दिया। अब मेरी आत्मा हर प्रकार से संतुष्ट है।"- इतना कह कर स्वामी जी उठे और अपनी कुटिया में चले गए।

लघुकथा

नीम का पेड़

अमजद अपने अब्बू के इंतकाल के बाद, अपनी अम्मी ख़ालिदा को गांव में अकेले व तन्हा रहने के लिए छोड़कर अपनी बेगम और बच्चों के साथ रहने के लिए शहर चला गया, लेकिन खालिदा भला कैसे अपने जिंदा रहते उस गांव व घर को छोड़ सकती थी। जिसके जर्रे-जर्रे में उसके शौहर की यादें बसी थी। ख़ालिदा को ख़ासकर दरवाज़े पर लगे उस नीम के पेड़ से बेइंतहा मोहब्बत थी। जिसे अमजद के अब्बू ने अपने हाथों से लगाया था। वे ज़ब भी कभी खुद को बहुत तन्हा व अकेली महसूस करती थी, तो घंटो उस नीम के पेड़ से ऐसे बाते करती थी, जैसे वे कोई नीम का पेड़ नहीं बल्कि, उसके पास अमजद के अब्बू खड़े हो। एक बार ख़ालिदा ने अमजद से कहा भी था, कि अमजद मेरे बेटे तू बेशक अपनी इस अम्मी को हज मत कराना, लेकिन बेटे मेरे जिंदा रहते तू कभी भी किसी से अपने अब्बू की इस नीम के पेड़ का सौदा मत करना। लेकिन शायद अमजद को अपने अम्मी ख़ालिदा की परवाह कहा थी, अगर होती तो उस दिन वे हरगिज उस नीम के पेड़ का सौदा ना करता। जिसके लिए उसकी अम्मी ख़ालिदा ने उसे मना किया था। उस दिन ख़ालिदा ने पहली बार अपने कलेज़े पर पत्थर रखकर ना सिर्फ अमजद से लड़ पड़ी, बल्कि उसने यहां तलक कह दिया, कि जा! चला जा! मेरी नजरो के सामने से और आइंदा मेरे जिंदा रहते कभी भी तू गांव मत आना और गर मेरी मौत भी हो जाए तो, तू मेरी मिट्टी को हाथ भी मत लगाना। इसके बाद अमजद तीन दिन और गांव रहा, लेकिन इस दरमिया उसने अपनी अम्मी से बात भी नहीं की। चौथे दिन वे बिना अपनी अम्मी से बात व सलाम किये, शहर चला गया, ऐसा पहली बार हुआ। ख़ालिदा अमजद की इस हरकत पर बहुत रोई, उसकी आंख तो आंख वे पाक आंचल तलक भीग गया, जिसके साये तले सोने के लिए फरिश्ते तलक तड़पते है, लेकिन ये अमजद ना समझ सका। इसके बाद फिर अमजद तभी गांव लौटा ज़ब उसके गांव वालों ने उसे फोन से ये बताया कि अमजद आज सुबह तुम्हारी अम्मी ख़ालिदा का इंतकाल हो गया। ये सुनकर अमजद को एक शॉक सा लगा। वे तुरंत ही अपने गांव के लिए चल पड़ा और गांव पहुंचने पर ज़ब अमजद की नजर अपनी अम्मी की लाश पर पड़ी, तो उसने देखा की जैसे उसकी अम्मी ख़ालिदा आज नीम के पेड़ के नीचे अब्बू के साथ बैठी कह रही हो, कि तू आ गया अमजद।

रंगनाथ द्विवेदी
जौनपुर

आईने के पीछे

रवि हर सुबह तैयार होकर आईने के सामने खड़ा होता। बाल ठीक करता, कॉलर सेट करता, और एक हल्की मुस्कान के साथ खुद को देखता और "परफेक्ट!" कहकर बाहर निकल जाता। आईना रोज़ उसकी आदत से परिचित था। पर आज अचानक उसने देखा कि रवि की मुस्कान थोड़ी थकी हुई थी, आंखों में हलकी झल्लाहट और होंठों पर बनावटीपन। फिर भी रवि बोला - "परफेक्ट!" आईने को खामोशी अखरने लगी। वह सोचने लगा-कब से मैं बस चेहरा दिखा रहा हूं जबकि असल रवि तो मेरे पीछे छुपा बैठा है उसके तनाव, दिखावे, जलन, दिखावटी रिश्ते-सब पीछे हैं। उस दिन आईने ने खुद को चुपचाप दीवार से गिरा लिया। रवि ने देखा, कांच टूटा पड़ा था। वह बोला- "ओह, अब एक नया आईना लाना पड़ेगा।" पर उसे क्या पता, पुराना आईना टूटने से नहीं टूटा था, बल्कि सच्चाई थामे-थामे थक गया था।

डॉ. योगिता जोशी
शिक्षाविद् व साहित्यकार

समीक्षा

जिंदगी का साथ

'मैं ज़िंदगी का साथ निभाता चला गया' हिन्दी सिनेमा के पहले तीन महानायकों में एक देव आनंद के जीवन, कृतित्व और व्यक्तित्व के जाने अनजाने पहलुओं को समेटे यह किताब संभवतः उनके बारे में पहली समग्र किताब है। देव साहब ऐसे अभिनेता रहे हैं जिनके जीवन-काल में ही उनका एक-एक अंदाज़, उनकी एक एक अदा किंवदंती बनी। उनकी चाल, उनका पहनावा और उनके बालों का स्टाइल उस दौर के युवाओं के क्रेज थे। असंख्य युवतियों के क्रश तो वे थे ही। यह अजीब है कि इस हरदिलअज़ीज़ अभिनेता के सिनेमा में अविस्मरणीय योगदान और देश के आम आदमी तक उसे पहुंचाने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करने की कोशिशें बहुत कम हुई हैं। उनकी अपनी आत्मकथा 'रोमांसिंग विद लाइफ' के अलावा मेरी नजरों से ऐसी कोई किताब नहीं गुजरी। दिलीप कुमार पाठक की यह किताब उस कमी को पूरी करती दिखती है। इसमें देव साहब के जीवन, उनके संघर्षों, उनकी अभिनय और निदेशकीय क्षमताओं के मूल्यांकन के साथ अपने समकालीन अभिनेताओ और अभिनेत्रियों के साथ उनके रिश्तों, सुरैया के साथ उनके अधूरे प्रेम, कल्पना कार्तिक के साथ उनके दांपत्य जीवन, उनकी इश्कबाजी, जीवन और काम के प्रति उनके समर्पण, उनकी ऊर्जा और जिंदादिली, उनके व्यक्तिगत जीवन के विरोधाभासों और राजनीतिक सोच का भी लेखाजोखा है। देव साहब का सम्पूर्ण जीवन उनकी इस किताब के पन्नों में सिमट आया है।

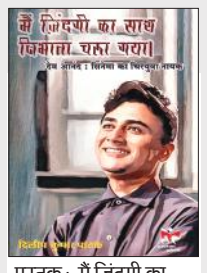

पुस्तक : मैं ज़िंदगी का साथ निभाता चला गया
लेखक : दिलीप कुमार पाठक
पुस्तक का नाम : मैं ज़िंदगी का साथ निभाता चला गया
प्रकाशन : शब्दगाथा मीडिया पब्लिशर मुंबई
समीक्षक : ध्रुव गुप्त

उठते हैं सवाल

धर्म, दर्शन और आध्यात्म जब एक समय पर मिलते हैं तब वह जनोपयोगी साहित्य होता है। कवि-कथाकार डॉ.रामावतार शर्मा हिन्दी साहित्य का एक समादृत सुपरिचित नाम है। अब तक आपकी ग्यारह कृतियां प्रकाशित हो चुकी हैं उनकी नवीनतम प्रकाशित कृति- उठते हैं सवाल। कविता पढ़ी नहीं महसूस की जाती है। अनुभव का यही रंग उनकी रचनाओं में यत्र-तत्र- सर्वत्र बिखरा हुआ है। उनकी रचनाओं में विविधता के दर्शन होते हैं। आध्यात्मिक चेतना से अनुस्यूत विचार शब्द-शिल्प सौन्दर्य में ढलकर रह जाता है। उसकी स्पष्ट छाप उनकी दार्शनिक रचनाओं में देखी जा सकती है। बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी 'आलोक' जी जीवन के कवि हैं। समीक्ष्य कृति में उनके द्वारा लिखी हुई 96 रचनाएं संकलित हैं। 'आलोक' जी समय की नब्ज़ पहचानते हैं। निर्बाध शैली में निर्द्वन्द होकर वह अपनी बात कहने में सक्षम हैं। 'सही आदमी सही बातें'- में वह लिखते हैं-उठते हैं सवाल कवि की बहुज्ञता का प्रमाण पेश करती है। कवि ने कविता को छंदों के अजायबघर से निकाल कर स्रोतस्विनी की तरह बहने का अवसर दिया है। भावों की तरंगिणी इसमें अवगाहन करते हुए आगे बढ़ती है। रचनाओं की विविधता बिखरे हुए मोती के समान है जिसे कवि ने इस कृति में पिरोने का काम किया है। अत्युत्तम सर्जना के लिए कवि 'आलोक' जी को हार्दिक आभार अर्पित है। आशा है कि हिन्दी के सुधि-सुविज्ञ पाठक इस कृति को व्यापक महत्व देंगे।

कृति का नाम-उठते हैं सवाल
कृति कार - डॉ.रामावतार शर्मा 'आलोक'
प्रकाशन संस्था-मगवा प्रकाशन दिल्ली
प्रकाशन वर्ष - 2025
पृष्ठांकन संख्या - 276
मूल्य - 225/- मात्र
समीक्षक- रमेशचन्द्र द्विवेदी (पूर्व प्रधानाचार्य)

व्यंग्य

लौकी का मिर्ची अवतार

लौकी होने का दर्द कोई नहीं समझ सकता है लौकी होने का अर्थ है। ना किसी के नजरों में सम्मान होना और ना ही कहीं पर सराहना मिलना। बस जरूरत पर इस्तेमाल होना और फिर उपेक्षा पाना यही लौकी की किस्मत है। कुछ लोगों की भी किस्मत ऐसी होती है आसान नहीं होता है बिना सम्मान और सराहना के जीना। एक दिन खेत में चतुरी सब्जी तोड़ रहे थे। उनको भिंडी बहुत पसंद तो सबसे पहले नरम नरम भिंडियों को एकदम महाराज के जैसे टोकरी में स्थान देते जा रहे थे। और भी कुछ सब्जियों तोड़ी उन्हें भी अपनी सब्जी की टोकरी में सजाकर करीने से रख लिए। और फिर अपने खेत के मेड़ पर लगे हुए कटहल के पेड़ से ऊपर से सख्त और अंदर से नरम नरम कटहल तोड़ा। कटहल तोड़ते हुए ही उनके मुंह में पानी आ रहा था। कि आज कोफ्ता खाने को मिलेगा और कटहल को भी टोकरी में बीचो-बीच सिंहासन पर सत्ता रुढ मंत्री की तरह विराजमान कर दिए। सारी सब्जियां टोकरी में अपना-अपना स्थान ग्रहण कर ली।

लेकिन ठटर पर लटका हुआ लौकी इंतजार करता ही रह गया ना चतुरी को उधर जाना था और ना ही वह उधर गए। पहले तो लौकी ने कुछ देर अपनी बारी का इंतजार किया। लेकिन यह इंतजार तो जनता के ग़रीबी से मुक्त होने के इंतजार से भी लंबा खिंचता हुआ दिख रहा था। न जाने कहां से लौकी ने यह भरम पाल लिया था कि उसको भी मंत्री ना सही संतरी वाली जगह तो मिल ही जाएगी। बिल्कुल आम जनता के जैसे उसकी अपेक्षाएं हो गई थी। कि उसे भगवान न सही इंसान तो समझ लिया ही जाएगा। और उस पर मंत्री रूपी देव द्वारा कृपा दृष्टि किया जाएगा। पर अपेक्षाएं तो होती ही हैं टूटने के लिए, तो वैसे ही लौकी का दिल भी टूट गया। और वह सब्जी तोड़ कर जाते हुए चतुरी से रोते हुए बोली-क्यों मुझे ऐसे अकेले छोड़ कर जा रहे हो! तो चतुरी बड़े ही उपेक्षा से उसे देखकर फिर से अपने रास्ते चल पड़े। पर लौकी तो आज अपना खाता खोल कर बैठा था। और बेहद ही भड़क उठा बिल्कुल महंगाई से तंग हुई जनता के जैसे...उसकी जुबान भी राजनेताओं के बिगड़े बोल जैसी हो गई.. और सीधे आपसे तू तड़ाक पर उतर आया। लगता था ई लौकी न्यूज़ चैनल आजकल देख रहा है। और वहीं से असंभ्य भाषा बोलना सीख रहा है। भड़क के बड़े-बड़े बोल बोल रहा और सीधे तू तड़ाक पर उतर आया और बोला-जिस दिन कटहल खाकर तुम्हारे पेट में मरोड़ का डीजे फुल वॉल्यूम में बज रहा होगा .. उस दिन तुम्हें इस लौकी की औकात समझ में आएगी और उस दिन तुम्हें बताऊंगा जब रोते गिड़गिड़ाते हुए आओगे। अब तो चतुरी को कुछ देर के लिए ठहरना पड़ा बात तो सही थी। आखिर कटहल खाने के बाद जो पेट का बैंड बजता है। उसे लौकी खाकर ही तो सही सलामत किया जाता है। लौकी बिल्कुल जीतने की उम्मीद बढ़ गई विपक्षी के भांति बोला-रुक क्यों रहे हैं जाओ मैं भी देखता हूं कि जब तुम्हारा कटहल साथ नहीं देगा... जिस दिन तुम लौकी के शरण में आओगे.. उस दिन तुम्हारा मैं क्या हाल करता हूं..! तो चतुरी भी ताव में आकर बोला-इतना ताव अच्छा नहीं होता है ..और वह भी लौकी का.. एक तो बिना स्वाद की सब्जी.. उस पर भी कोई पसंद नहीं करता है ..बच्चे हो या बूढ़े देखना भी पसंद नहीं करते हैं ..!

तो लौकी हंसते हुए बोला-तुम चाहे जितना मुझे हल्के में ले सकते हो ..पर इग्नोर कतई नहीं कर सकते हो.. मैं जनता की तरह हूं जिसकी शरण में आखिर तुम्हें आना ही पड़ता है.. अगर नहीं आओगे तो आज नहीं तो कल तुम्हारा पत्ता इस धरती से कटना तय है अब चतुरी संभल गए और समझ गए की बात तो सही है। और धीरे से इज्जत के साथ उन्होंने लौकी को काटा और अपने टोकरी में बहुत इज्जत के साथ रख लिए लौकी बड़े ही शान से टोकरी में विराजमान हुआ। लौकी को भी अधिकार तभी मिला जब उसने मिर्ची अवतार ले लिया।

रेखा शाह
बलिया

विरोध आहार: जब भोजन बन जाए जहर

आयुर्वेद, जो जीवन का शास्त्र माना गया है, केवल रोगों की चिकित्सा नहीं बल्कि स्वस्थ जीवनशैली का मार्गदर्शन भी करता है। इसमें आहार को औषधि के रूप में मान्यता प्राप्त है। "आहार ही औषधि है"– यह वाक्य आयुर्वेद की मूल अवधारणा को स्पष्ट करता है। इसी क्रम में आयुर्वेद में एक महत्वपूर्ण सिद्धांत आता है जिसे "विरोध आहार" कहा जाता है। विरोध आहार से आशय उन खाद्य पदार्थों या आहार संयोजनों से है जो एक-दूसरे के गुण, स्वभाव या पाचन प्रक्रिया के अनुरूप नहीं होते हैं। जब ऐसे असंगत खाद्य पदार्थ एक साथ सेवन किए जाते हैं, तो ये शरीर में विष के समान कार्य कर सकते हैं, जिससे अनेक प्रकार के शारीरिक और मानसिक रोग उत्पन्न हो सकते हैं।

डॉ. ज्ञान देव शर्मा
उप चिकित्सा अधीक्षक रोहिलखंड आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज एवं चिकित्सालय, बरेली।

आयुर्वेद में 'विरोध आहार' उन आहार पदार्थों को कहा गया है जिनका सेवन यदि एक साथ किया जाए तो वे शरीर के लिए हानिकारक होते हैं, जबकि अलग-अलग सेवन करने पर वे हानि नहीं पहुंचाते। यानी जब दो या अधिक खाद्य पदार्थों के गुण, तासीर, पाचन समय, रस (स्वाद), वीर्य (ऊर्जा) और प्रभाव आपस में मेल नहीं खाते, और उनका एक साथ सेवन किया जाता है, तो वे शरीर में 'अम' (अर्थात अपक्व भोजन या टॉक्सिन्स) उत्पन्न करते हैं, जिससे अनेक रोग जन्म लेते हैं। इसे ही आयुर्वेद में "विरोध आहार" कहा गया है।

क्यों हानिकारक होता है विरोध आहार

जब दो असंगत खाद्य पदार्थ एक साथ पेट में पहुंचते हैं, तो शरीर की पाचन क्रिया भ्रमित हो जाती है। इससे पाचन ठीक से नहीं होता और अधपचा भोजन (अम) बनता है। यह 'अम' शरीर में रुक-रुक कर संचार करता है, जिससे वह विभिन्न अंगों में जाकर रोग उत्पन्न करता है–जैसे त्वचा रोग, अपच, गठिया, एलर्जी, मोटापा, हृदय रोग आदि।

जैसे दूध और मछली–दूध ठंडी प्रकृति का और मछली गर्म प्रकृति की होती है। जब दोनों को एक साथ खाया जाता है, तो उनके विपरीत गुण शरीर में टकराते हैं और त्वचा रोग जैसी समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं।

उदाहरण

- दूध और मछली से–त्वचा रोग, सफेद दाग, एलर्जी
- दूध और खट्टे फल (जैसे संतरा, नींबू)=अपच, गैस, अम्लपित्त
- दूध और नमक– त्वचा विकार, पाचन गड़बड़ी
- केला और दूध– भारीपन, कब्ज
- खरबूजा और दूध– अपच, गैस
- दही और गर्म भोजन या गर्म पानी– त्वचा विकार, अम्लपित्त
- आम और दूध– आमवृद्धि, पाचन दोष
- शहद और घी (बराबर मात्रा में)– विष के समान प्रभाव
- चावल और सिरका– रक्तदोष, पित्त वृद्धि
- मूली और दूध– बुखार, पाचन दोष
- प्याज और दूध– शरीर में विष निर्माण, चर्म रोग
- दूध और उबले अंडे– पाचन गड़बड़ी, विषैले प्रभाव
- मांस और दही– पाचन में बाधा, आमवृद्धि
- दूध और दही – तासीर टकराव, कफ वृद्धि
- घी और शुद्ध तेल (साथ पकाकर)– अग्निमांद्य (खराब पाचन)
- जले हुए खाद्य और ठंडा पेय– अग्निदोष, अपच
- रात को दही खाना–कफ वृद्धि, सर्दी, जुकाम
- शहद और गरम पानी (अत्यधिक गरम)–विष के समान

आचार्य चरक ने विरोध आहार के 18 प्रकारों का उल्लेख किया है, जिनमें से प्रमुख प्रकार देश विरोध, काल विरोध, अग्नि विरोध, मात्रा विरोध, संस्कार विरोध, संगति विरोध, वीर्य विरोध, और सत्म्य विरोध हैं। देश विरोध का अर्थ है– किसी विशेष भौगोलिक क्षेत्र के अनुसार अनुपयुक्त भोजन। उदाहरण के लिए, शुष्क मरुस्थलीय प्रदेश में अत्यधिक रूक्ष आहार नुकसान पहुंचा सकता है। काल विरोध का अर्थ है ऋतु, दिनचर्या या आयु के अनुसार अनुपयुक्त आहार। जैसे गर्मियों में गरिष्ठ, तैलीय और मसालेदार भोजन का सेवन शरीर में पित्त बढ़ाता है। अग्नि विरोध तब होता है जब व्यक्ति की पाचन शक्ति के अनुरूप आहार न लिया जाए। मंदाग्नि वाले व्यक्ति को यदि अत्यधिक भारी और तैलीय भोजन दिया जाए, तो वह ठीक से पच नहीं पाता।

मात्रा विरोध का तात्पर्य

किसी भी पदार्थ की मात्रा का असंतुलन, जैसे– बहुत अधिक या बहुत कम मात्रा में भोजन करना। संस्कार विरोध उन पदार्थों पर लागू होता है जिन्हें गलत प्रक्रिया से पकाया गया हो, जैसे– बार-बार गरम किया गया तेल या घी, जो विषैले तत्व उत्पन्न करता है। संगति विरोध तब होता है जब दो या अधिक खाद्य पदार्थों का संयोजन आपस में मेल नहीं खाता। उदाहरणस्वरूप– दूध के साथ नमक, केला के साथ दूध या फल के साथ दूध का सेवन करना। वीर्य विरोध उन खाद्य पदार्थों पर लागू होता है जिनकी तासीर एक-दूसरे से विपरीत होती है। जैसे दूध शीतल है और मछली उष्ण, इसलिए इनका संयोजन हानिकारक माना गया है। सत्म्य विरोध तब होता है जब व्यक्ति को जो आहार या पदार्थ अनुकूल होता है, उसकी उपेक्षा कर विपरीत आहार दिया जाए। इन विरोध आहार संयोजनों के परिणामस्वरूप शरीर में अनेक रोग उत्पन्न हो सकते हैं। उदाहरणस्वरूप त्वचा रोग जैसे खुजली, सफेद दाग, एक्जिमा, एलर्जी, पाचन संबंधी रोग जैसे अपच, कब्ज, अजीर्ण, गैस, एसिडिटी आदि। इसके अलावा प्रतिरोधक क्षमता में कमी, बालों का झड़ना, मानसिक चिड़चिड़ापन, अवसाद तथा दीर्घकालीन रोग जैसे मोटापा, उच्च रक्तचाप, मधुमेह, यहां तक कि कैंसर तक हो सकते हैं। कुछ प्रमुख विरोध आहार संयोजन जिन्हें प्रत्येक व्यक्ति को टालना चाहिए, वे हैं– दूध और मछली, दूध और नमक, घी और शहद (समान मात्रा में), केला और दूध, खरबूजा और दूध, आम और दूध, दही और गर्म भोजन आदि।

आधुनिक विज्ञान भले ही विरोध आहार शब्द का प्रयोग न करता हो, लेकिन फूड इंटॉलरेंस और एलर्जी जैसे सिद्धांत कहीं न कहीं विरोध आहार की अवधारणा से मेल खाते हैं। जैसे–लैक्टोज इनटॉलरेंस, ग्लूटन एलर्जी या फूड कॉम्बिनेशन थ्योरी, जो बताती है कि कुछ फूड आइटम्स को एक साथ न खाने में ही भलाई है। इसी प्रकार बार-बार गरम किया गया तेल, प्रोसेस्ड फूड, प्रिज़र्वेटिव्स का उपयोग भी आधुनिक जीवन में "विरोध आहार" की श्रेणी में ही आता है। विरोध आहार से बचने के लिए कुछ सरल उपाय अपनाए जा सकते हैं। सबसे पहले व्यक्ति को अपने शरीर की प्रकृति–वात, पित्त और कफ–के अनुसार भोजन चुनना चाहिए। ऋतु, स्थान, उम्र और पाचन शक्ति के अनुसार आहार निर्धारित करें। एक समय में सीमित प्रकार के आहार लें, बहुत अधिक विविधता और मात्रा पाचन के लिए हानिकारक होती है। ताजे, स्वच्छ और सात्विक भोजन का सेवन करें। अधिक प्रोसेस्ड, रिफाइंड या बार-बार गरम किए गए खाद्य पदार्थों से बचें। आयुर्वेद के अनुसार भोजन करते समय मन की स्थिति भी भोजन को प्रभावित करती है, इसलिए भोजन करते समय शांतचित्त और एकाग्र होना चाहिए। विशेष रूप से बच्चों, वृद्धों, गर्भवती महिलाओं और रोगियों के लिए विरोध आहार संयोजन से बचना अत्यंत आवश्यक है। आयुर्वेद के अनुसार, कई बार रोग की जड़ केवल गलत आहार संयोजन होता है और यदि उसे ठीक कर दिया जाए, तो रोग स्वत: ही समाप्त हो जाता है। इसीलिए यह समझना अत्यंत आवश्यक है कि हम जो कुछ भी खा रहे हैं, वह हमारे शरीर के अनुरूप है या नहीं। विरोध आहार केवल आयुर्वेद की एक अवधारणा नहीं, बल्कि यह एक वैज्ञानिक और व्यावहारिक जीवनशैली का मार्गदर्शन है। यदि हम इस पर ध्यान दें, तो न केवल रोगों से बचा जा सकता है बल्कि एक संतुलित, स्वस्थ और दीर्घायु जीवन भी प्राप्त किया जा सकता है। वर्तमान युग में जहां जंक फूड, प्रोसेस्ड फूड और बाजारू स्वादों ने हमारी थाली पर अधिकार कर लिया है, वहां यह और भी अधिक आवश्यक हो गया है कि हम अपने भोजन के संयोजन को समझें और आयुर्वेद के इस अमूल्य सिद्धांत को अपनाकर अपने और अपने परिवार के स्वास्थ्य की रक्षा करें। यदि हम विरोध आहार से बचने के सरल नियमों का पालन करें, तो यह न केवल रोगों की रोकथाम करेगा बल्कि एक दीर्घकालिक जीवनशैली का आधार भी बनेगा। अत: प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि वह विरोध आहार के सिद्धांत को आत्मसात करे, अपने आहार का मूल्यांकन करे और एक स्वस्थ समाज की स्थापना की दिशा में कदम बढ़ाए।

फिल्म जगत

सितारे जमीन पर

यह फिल्म हॉलीवुड की बहु प्रशंसित, बहुचर्चित, मास्टरपीस 'फॉरेस्ट गंप' का भारतीय एडॉप्शन लाल सिंह चड्ढा बनाकर अपना हाथ जल चुके है लेकिन ऐसा लगता है कि इस बार समझदारी से पिछली असफलता से सबक लिया है। सितारे जमीन पर भी एक स्पैनिश फिल्म चैंपियन का भारती एडॉप्शन है लेकिन पटकथा लेखक दिव्य निधि शर्मा ने इस फिल्म का भारतीय कारण बहुत सुंदर तरीके से किया है फिल्म में कभी भी कोई डल मोमेंट नहीं आता। पटकथा कसी हुई है। निर्देशक आर एस प्रसन्ना का निर्देशन शानदार है, हर फ्रेम में उनकी पकड़ दिखती है।

आमिर खान ने गुलशन अरोड़ा का किरदार जो एक जिद्दी चिड़चिड़ा और खुद के टिंगु जी होने से हीन भावना से ग्रस्त व्यक्ति की भूमिका बहुत बखूबी के साथ निभाया है। एक रात नशे से गाड़ी चलाते हुए वह गाड़ी को ठोक देता है जज साहिब इसके लिए 3 महीने की कम्युनिटी सर्विस की सजा देते हुए कहती है कि उन्हें न्यूरो चैलेंज्ड युवाओं को बास्केटबॉल की कोचिंग देनी होगी तो उसकी प्रतिक्रिया होती है क्या रे इन पागलों को मैं कैसे सिखाऊंगा। बाद में कैसे 8 किरदारों से मिलकर से गुलशन अरोड़ा एक चिड़चिड़ा और संवेदनशील से एक सेंसिटिव और केयरिंग इंसान बनता है इस वेरिएशन को आमिर खान ने बहुत सुंदर तरीके से निभाया है। आमिर की मां के रूप में डाली अहलूवालिया टिपिकल दिल्ली की सरदारिन की भूमिका में जान डाल दी है। बिजेंदर कल भी अपनी छोटी सी भूमिका में छा गया हमेशा की तरह एक कॉमिक रिलीफ देते है। जेनेलिया देशमुख आमिर खान की पत्नी की भूमिका में है। लेकिन फिल्म के असली सितारे तो न्यूरो सिंड्रोम से जूझते आठ किरदार ही है, जिसकी भूमिका आयुष पेंडसे, आयुष दत्ता, आयुष भंसाली, ऋषि साहनी, संवित देसाई, अंकित वर्मा आदि ने बखूबी के साथ निभाया है। यह फ़िल्म हमे हंसाती है, गुदगुदाती है तो रुलाती भी है। होठों पर हंसी लाती है तो पलकों के कोर को आंसुओ से भिंगो भी देती है। बॉयकॉट के बेसुरे राग को नजरअंदाज करते हुए इस फिल्म को जरूर देखे। फिल्म आपको जरूर पसन्द आएगी।

समीक्षक-महेश पांडेय

रोमांच से भरी कुबेर

कुबेर फिल्म वाथी के बाद धनुष की दूसरी तेलुगु फिल्म है। यह फिल्म तेलुगु और तमिल दोनों भाषाओं में बनी है। निर्माता, निर्देशक और अन्य तकनीकी टीम तेलुगु इंडस्ट्री से हैं। मुझे फिल्म के बारे में दो चीजें बहुत अच्छी लगीं। धनुष का जबरदस्त अभिनय और शेखर कमुला की लेखनी, लेखन के विचार बहुत ठोस हैं। कुल मिलाकर कहानी ताज़ा लगती है, लेकिन आपने पहले भी अलग-अलग तरीकों से फिल्म द्वारा कहानी के माध्यम से दिए जाने वाले संदेश और कथन को सुना होगा, लेकिन यहां अच्छी बात यह है कि शेखर कमुला द्वारा प्रस्तुत किए गए संदेश और कथन में आपको एक ताज़गी दिखाई देगी। जिस तरह से उन्होंने दृश्यों को लिखा, उन्हें मंचित किया, अदायगी दी, ये चीजें बहुत प्रभावशाली थीं।

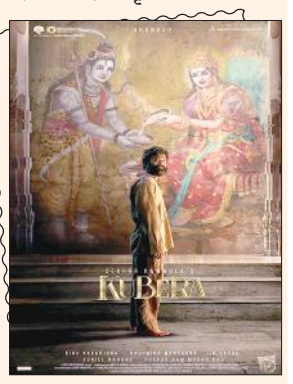

फिल्म आपको कुछ हिस्सों में बांधे रखती है। फिल्म का पहला भाग बहुत ही आकर्षक है। वर्तमान में, दर्शकों को ड्रामा फिल्म में बांधे रखना बहुत मुश्किल काम होता है। दूसरा भाग टुकड़ों में रोचक लगता है, फ़िल्म क्लाइमेक्स तक खींची हुई है। दिखाई गई कहानी तीन घंटे की फ़िल्म है, यह कहानी इतने लंबे समय की हकदार नहीं है। क्लाइमेक्स को लेकर भी कुछ असहमति हो सकती है, कुछ को यह पसंद आएगा, कुछ दर्शक इससे ज्यादा की उम्मीद करेंगे।

धनुष फ़िल्म में एक असली भिखारी की तरह लगे, उन्होंने पूरी लगन से काम किया है। अगर उनके सामने एक असली भिखारी भी खड़ा हो जाए, तो एक असली भिखारी अमीर लगेगा। धनुष ने अपने काम के प्रती पुरा डेडिकेशन दिया है। रश्मिका भी पूरी फ़िल्म में रोमांच पैदा करती रहीं, मेरा मतलब है कि उन्होंने अपने किरदार को 101 प्रतिशत समर्पित किया है। फ़िल्म की सिनेमेटोग्राफी बहुत अच्छी है, पूरी फ़िल्म लाइव लोकेशन (आउटडोर) पर शूट की गई है। निर्देशक ने धनुष को मुंबई का पूरा नज़ारा दिखाया है। इमोशनल सीन में बीजीएम अच्छा था, वो बात अलग है कि फ़िल्म आपको भावनात्मक रूप से कनेक्ट नहीं करती। संगीत ठीक-ठाक दिया गया है, हिंदी डब में गाने काफ़ी प्रतीक्षित हैं। कुल मिलाकर, धनुष की परफॉरमेंस और लेखन के लिए आप फ़िल्म को देख सकते हैं। फिल्म अच्छी है।

समीक्षक- शिवकांत पालवे

खाना खजाना

ब्रेड पकोड़े

बारिश का मौसम में कुछ ज्यादा ही भूख लगती है और गरमा गरम तीखा खाने का सबका मन करता है। तो आज बनाते है ब्रेड और मसालो के संगम से बने चटपटे तीखे ब्रेड पकोड़े।

सामग्री

- चार ब्रेड
- दो चम्मच बेसन
- एक बारीक कटा प्याज
- दो बड़े चम्मच कद्दूकस चीज
- दो-तीन बारीक कटी हरी मिर्च
- बारीक कटा हरा धनिया
- एक चम्मच लाल मिर्च
- एक छोटी चम्मच हल्दी पाउडर
- एक छोटी चम्मच गरम मसाला
- एक छोटी चम्मच चाट मसाला
- नमक स्वाद अनुसार
- तलने के लिए तेल

बनाने की विधि सबसे पहले एक बर्तन ले इसमें ब्रेड को छोटे-छोटे पीस में कट करके डाल दे। अब इसमें बेसन डालें बारीक, कटा प्याज, हरी मिर्च, धनिया और सभी मसाले मिलाकर थोड़ा सा पानी डालकर अच्छे से मसल ले। अब कड़ाही में तेल गर्म करें और तैयार मिक्सर से छोटे-छोटे पकोड़े बनाकर गोल्डन होने तक मीडियम आंच पर तल ले। तैयार पकोड़े को हरी चटनी और टमाटर सॉस के साथ सर्व करें।

प्रीतम कोठारी
फूड ब्लॉगर

हल्द्वानी के जीवन जोशी मन की बात के हीरो

'मन के हारे हार है मन के जीते जीत' या 'जहां चाह है वहां राह है' कहावतों को चरितार्थ किया है, देवभूमि उत्तराखंड के हल्द्वानी के रहने वाले "जीवन जोशी" ने। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यक्रम मन की बात में जीवन जोशी का उल्लेख उनकी काष्ठ कला की प्रशंसा न सिर्फ जोशी बल्कि उनके सभी शुभचिंतकों तथा परिवारजनों के लिए गर्व एवं उत्साह की बात बन गई। जोशी का 'हिंदी की गूंज' संस्था से भी जुड़ाव रहा है, वह एक बेहद ही सीधे एवं सरल व्यक्तित्व के धनी व्यक्ति हैं, उनकी वाणी में अजब सी आत्मीयता है।

-डॉ. ममता श्रीवास्तवा सरुनाथ

पूछे गए प्रश्नों के उत्तर कुछ इस प्रकार हैं-

- हमने सुना है कि आपका बचपन बहुत ही चुनौतीपूर्ण रहा है, कोई ऐसी समस्या जो आपको याद हो जिससे जूझने में आपके अंदर एक ऊर्जा मिली हो बताइए?

उत्तर-पोलियो ग्रसित होने के कारण मुझे स्कूल जाने का सौभाग्य नहीं मिल पाया। घर के सदस्यों द्वारा जो भी पढ़ाया गया वही सीखता रहा। चलने-फिरने की असफलता के कारण और पर्याप्त साधनों के अभाव में बाहरी दुनिया से भी अनभिज्ञ रहा। यदाकदा मेरे चचेरे भाई अल्मोड़ा आते थे तो एक नेपाली मजदूर की पीठ पर बैठकर मुझे मेले आदि में घूमाने ले जाते थे। सभी के सहयोग से नेपाली मजदूर की पीठ पर जाकर ही मैंने प्राइवेट अभ्यर्थी के रूप में पांचवी की परीक्षा प्राप्त की। 17 वर्ष की आयु में अखिल भारतीय आर्युविज्ञान संस्थान में इलाज प्रारंभ हुआ और तीन ऑपरेशन के बाद में कैलीपर और वैसाखियों के सहारे चलने में सक्षम हुआ तथा हाई स्कूल की परीक्षा प्राप्त की। आज भी बैसाखियों तथा कैलीपर के सहारे एक दृढ़ निश्चय एवं जुझारू जीवन को लेकर आगे बढ़ रहा हूं।

- काष्ठ कला के प्रति आपका झुकाव कब और कैसे हुआ?

उत्तर- मैंने पिता के सानिध्य में पेपर मैसी, काष्ठ कला और चीड़ के पेड़ की छाल (जिसे स्थानीय बोलचाल की भाषा में बगेट कहा जाता है) से अनेक प्रकार की कलाकृतियां बनाने का प्रारंभिक एवं व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त किया, इसी दौरान एक मित्र सानिध्य में आए श्री संजय सिंह बेरी जो इस कला के ज्ञाता और इस कला में निपुण थे उनके द्वारा कुछ टिप्स और ज्ञान प्राप्त हुआ जिसके माध्यम से इस कला को जीवन के साथ एकाकार करने का मार्ग प्रशस्त हुआ।

- आपने चीड़ के पेड़ को ही अपनी कला के लिए क्यों चुना?

उत्तर-उत्तराखंड में चीड़ के पेड़ प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है और इस कार्य के लिए इसे आसानी से बिना पर्यावरण को नुकसान पहुंचाए बिना किसी आर्थिक व्यय के प्राप्त किया जा सकता है।

- आपकी इस प्रतिभा को सबसे पहले कब पहचान मिली और कैसे ?

उत्तर-इस की पहली पहचान जिला उद्योग केन्द्र हल्द्वानी नैनीताल से जिला स्तरीय हस्तशिल्प पुरस्कार से हुई।

- आज जब आप मन की बात का हिस्सा बन चुके हैं और सभी के दिल में अपनी जगह बना चुके हैं, कैसा महसूस कर रहे हैं?

उत्तर-काफी उत्साहित हूं आदरणीय मोदी जी के इस तोहफे ने मेरी ज़िन्दगी में एक गजब की ताकत व स्फूर्ति भर दी है। बहुत अधिक प्रसन्न महसूस कर रहा हूं।

- भविष्य में आप क्या करना चाहते हैं अपने इस काष्ठ कला को लेकर, क्या कोई योजना है जो आप हमारे पाठकों को बताना चाहेंगे?

उत्तर- मैं चीड़ के पेड़ की छाल, बगेट, से कलाकृतियां बनाता हूं और लोगों को कलाकृतियां बनाना सिखा कर उन को स्वरोजगार से जोड़ना चाहता हूं। भविष्य में एक क्राफ्ट ट्रेनिंग सेंटर व उसका ऐसा विक्रय केन्द्र खोलने का विचार है जिससे सभी कलाकारों के बनाए उत्पादनों को बिक्री के लिए रखकर उनको एक बड़ा मंच दे सकूं।

साप्ताहिक राशिफल

-पं .मनोज कुमार द्विवेदी
ज्योतिषाचार्य, कानपुर

मेष इस सप्ताह शुभता में कुछ कमी देखने को मिल सकती है। आपके काम कुछ अड़चनों और अधिक भागदौड़ करने के बाद ही पूरे हो पाएंगे जिसके कारण आपका मन थोड़ा खिन्न रहेगा। यदि आप रोजगार के लिए भटक रहे हैं तो आपको काम के लिए अभी थोड़ा और इंतजार करना पड़ सकता है।

वृष इस सप्ताह में "सावधानी हटी दुर्घटना घटी" स्लोगन याद रखना होगा। यदि आप व्यवसाय से जुड़े हैं तो आपको कारोबार में धीमी प्रगति और अपेक्षाकृत कम लाभ होता नजर आएगा। आर्थिक दृष्टि से कहा जाए तो यह सप्ताह आपके लिए मध्यम फलदायी रहने वाला है।

मिथुन यह सप्ताह बीते हफ्ते के मुकाबले कहीं ज्यादा बेहतर और लाभप्रद रहने वाला है। आपके अधूरे और अटके कार्य पूरे होंगे। घर और बाहर दोनों जगह लोगों का भरपूर समर्थन और सहयोग प्राप्त होगा। यदि आप व्यवसाय से जुड़े हैं तो कोई बड़ी कारोबारी डील कर सकते हैं।

कर्क इस सप्ताह दूसरों के बहकावे में आकर अपना नुकसान करने से बचना होगा। आपके विरोधी आपके बनते काम को बिगाड़ने के लिए षडयंत्र रच सकते हैं। ऐसे में अपने कार्यक्षेत्र में खूब सावधान रहें। करियर-कारोबार से जुड़े मामले एक दूसरे से होड़ करते हुए नजर आएंगे।

सिंह यह सप्ताह मिलाजुला रहने वाला है। सप्ताह के पूर्वार्ध में अचानक से कुछ बड़े खर्चे आ सकते हैं। इस दौरान आप अपने घर की मरम्मत, साज-सज्जा अथवा सुख-सुविधाओं से जुड़ी चीजों पर बड़ी धनराशि खर्च कर सकते हैं। आपको करियर-कारोबार के सिलसिले में लंबी अथवा छोटी दूरी की यात्रा करनी पड़ सकती है।

कन्या यह सप्ताह शुभता और सौभाग्य लिए हुए है। आपके सोचे हुए काम समय पर और मनचाहे तरीके से पूरे होते नजर आएंगे। यदि आप व्यवसाय से जुड़े हैं तो आपका पूरा फोकस अपने कारोबार को आगे बढ़ाने और अधिक से अधिक लाभ कमाने पर रहेगा। आप अचानक से लंबी दूरी की यात्रा पर जासकते हैं।

तुला यह सप्ताह शुभता लिए हुए है। शुरुआत में किसी बहुप्रतीक्षित शुभ समाचार से होगी, जिसके कारण घर में खुशियों का माहौल बना रहेगा। इस सप्ताह अपने बुद्धि और विवेक के जरिए किसी महत्वपूर्ण कार्य को मनचाहे तरीके से संपन्न करने में कामयाब हो जाएंगे।

वृश्चिक यह सप्ताह मिश्रित फलदायी रहने वाला है। ऐसे में किसी भी प्रकार की मानसिक अथवा आर्थिक समस्या से बचने के लिए शुरुआत से चीजों का प्रबंधन करके चलना उचित रहेगा। यदि आप नौकरीपेशा व्यक्ति हैं तो अपने काम को समय पर बेहतर तरीके से करने का प्रयास करें और उसे किसी दूसरे के भरोसे छोड़ने की भूल बिल्कुल न करें।

धनु इस सप्ताह आपके काम थोड़ी भागदौड़ अथवा अड़चनों के बाद लेकिन मनचाहे तरीके से पूरे होंगे, जिसके चलते आपको कामकाज के दौरान आने वाली परेशानियों का अफसोस नहीं रहेगा। यदि आप बीते कुछ समय से आर्थिक समस्या से जूझ रहे थे तो इस सप्ताह उसका समाधान निकल आएगा।

मकर यह सप्ताह औसत फलदायी रहने वाला है। इस सप्ताह किसी भी कार्य में जल्दबाजी न करें तथा लोगों के साथ विनम्रता से पेश आएं। सेहत की दृष्टि से थोड़ी प्रतिकूल कही जा सकती है। इस दौरान मौसमी अथवा किसी पुरानी बीमारी के उभरने से शारीरिक कष्ट मिल सकता है। परीक्षा-प्रतियोगिता की तैयारी में जुटे लोगों का मन पढ़ाई से उचट सकता है।

कुंभ इस सप्ताह आपकी योजनाएं समय पर पूरी होंगी और कई बाधाएं भी दूर होंगी। कार्यक्षेत्र में किसी वरिष्ठ अधिकारी या प्रभावशाली व्यक्ति से सकारात्मक संपर्क बन सकता है, जो आपके करियर के लिए लाभकारी साबित होगा। नौकरीपेशा लोगों को प्रमोशन अथवा वेतन वृद्धि के संकेत मिल सकते हैं।

मीन इस सप्ताह आप कुछ निर्णय भावनात्मक रूप से जल्दबाजी में न लें। आर्थिक मामलों में थोड़ी सावधानी बरतें, कहीं अनावश्यक खर्च न हो जाए। कारोबार में कुछ रुकावटें आ सकती हैं, इसलिए योजनाओं को पुन: जांच कर ही आगे बढ़ें। नौकरीपेशा लोगों को सहकर्मियों के साथ तालमेल बनाए रखने की जरूरत है।

वर्ग पहेली (काकुरो)

काकुरो पहेली वर्ग पहेली के समान हैं, लेकिन अक्षरों के बजाय बोर्ड अंकों (1 से 9 तक) से भरा है। निर्दिष्ट संख्याओं के योग के लिए बोर्ड के वर्गों को इन अंकों से भरना होगा। आपको दी गई राशि प्राप्त करने के लिए एक ही अंक का एक से अधिक बार उपयोग करने की अनुमति नहीं है। प्रत्येक काकुरो पहेली का एक अनूठा समाधान है।

काकुरो 15

			19	6	
	20	3 6			
14					
22					
12					

काकुरो 14 का हल

	9		21		
	7	14 18	8	6	
7	2	1	4	18	
	23 13	8	9	6	4
17	8	9	6	5	1
	5		10	7	3

जोक्स ऑफ द डे

गर्लफ्रेंड- अगर तुम्हें मेरी याद आती है तो क्या करती हो?
बॉयफ्रेंड- मैं न तुम्हारी फेवरेट चॉकलेट खा लेता हूं
बॉयफ्रेंड- अगर तुम्हें मेरी याद आती है तो क्या करती हो?
गर्लफ्रेंड- मैं भी पसंदीदा गुटखा खा लेती हूं

पत्नी- क्यों जी आजकल आप रोज सुबह मेरे चेहरे पर पानी क्यों डालते हो?
पति- क्योंकि तुम्हारे पिताजी ने कहा था
मेरी बेटी बिल्कुल फूल की तरह है इसे मुरझाने मत देना

सिंधिया राजवंश की कुशल प्रशासिका थी राजमहिषी बैजाबाई

एक राजमहिषी बैजाबाई–सिंधिया राजवंश की कुशल प्रशासक, धर्म प्रेमी, प्रजापालक और महत्वाकांक्षी महारानी अपने भक्तिभाव, प्रजापालन और परोपकार परमार्थ के कार्यों में आगे रही रानियों में ग्वालियर राज्य की महारानी बैजाबाई का नाम भी अग्रिम पंक्ति में लिया जाता है। ग्वालियर का बैजाताल महारानी बैजाबाई के नाम से है। उज्जैन का द्वारिकाधीश गोपाल मंदिर में बैजाबाई की भक्ति का प्रतीक है। यहां उनकी प्रतिमा विराजमान है। शिवपुरी की छत्री में बने राम सीता एवं राधा कृष्ण मंदिर, भदैया कुण्ड शिवपुरी में गोमुख एवं बारादरी का निर्माण महारानी बैजाबाई ने ही कराया था। शिवपुरी का चिंताहरण मंदिर, काशी विश्वनाथ मंदिर में ज्ञानवापी मण्डप, बनारस में सिंधिया घाट उन्हीं की भक्ति के स्मारक है।

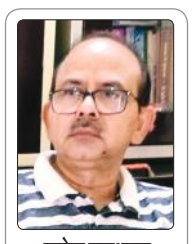

रूपेश उपाध्याय
अपर-कलेक्टर, सागर

महारानी बैजाबाई उन राज महिषीयों में थी जिन्होंने शौन्दर्य के बलबूते पर राज सत्ता तो प्राप्त की पर अपने पति महाराज दौलत राव का एकात्म समर्पण से साथ दिया। वे अपने कुशल प्रशासन से राज्य की प्रजापालन के साथ-साथ अंग्रेज़ो की कूटिनीतिक चालों से ग्वालियर राज्य की रक्षा करने में सफल रही। महाराज दौलत राव की मृत्यु के पश्चात रीजेंट की भूमिका में उन्होंने विपरीत परिस्थितियों में साहस, धैर्य और कौशल से ग्वालियर राज्य का हित संरक्षण किया। उनके द्वारा तीर्थो में मंदिर, धर्मशालाएं, घाट एवं स्थापित किए गए अन्नक्षेत्र आदि पुण्य कार्य उनकी कीर्ति पताका को आज भी फहरा रहे है।

बैजाबाई के पिता सर्जेराव घाटगे को क्रूरता और अधिकार लिप्सा के कारण मराठा इतिहास में कुटिलता की प्रतिमूर्ति के रूप में चित्रित किया गया है। "सचित्र दरबार" के ग्वालियर अंक में उन्हें कर्मवीर और राजनैतिक चाणक्य कहा गया है। उनकी पुत्री बैजाबाई अखण्ड सौभाग्य की ओर बढ़ रही थी। उनकी सुंदरता की चर्चा सारे हिंदुस्तान में फैल रही थी। जब यह खबर ग्वालियर के महाराज दौलतराव तक पहुंची तब सन 1798 में बैजाबाई का विवाह दौलतराव से हो गया।

बैजाबाई के रूपलावण्य के कारण एक ओर पेशवा बाजीराव दूसरी ओर दौलत राव, दोनो ही उनसे विवाह करने को उत्सुक थे, किंतु बैजाबाई के पिता सर्जेराव ने राजनीतिक दृष्टि दौलतराव से विवाह को प्राथमिकता दी।

महाराज दौलतराव ने जहां बायजाबाई को मनप्राण से चाहा तो उन्होंने भी पूरे एकात्म समर्पण भाव से दौलतराव की अंतिम घड़ियों तक धर्मनिष्ठा से साथ दिया। महाराज दौलतराव के अंतिम काल मे बे उनकी प्राणरक्षा के लिए विविध अनुष्ठान दान चेष्टाओं में प्रबर्त्त हो गई। मथुरा के 2000 माथुर चतुर्वेदियों एवं काशी के 2000 नैष्ठिक वैदिकों को उनके द्वारा प्रत्येक को एक सेर लड्डू, एक एक रुपया एवं अक्षत पूरित ताम्रपात्र देने का उल्लेख मिलता है। इसके साथ साथ गोदान आदि विविध अनुष्ठान भी आयोजित किए गए। 21मार्च 1827 को दौलतराव का स्वर्गवास हो गया। तब दौलतराव के दूर के संबंधी 11 वर्षीय बालक को जनकोजी राव के नाम से सिंहासन पर बिठा कर बैजाबाई रीजेंट के रूप में शासन करने लगी।

अंग्रेज भी इस स्थिति का फायदा उठाने को प्रयास करने लगे। उन्होंने इन विपरीत परिस्थितयों में कुचक्रों का डटकर सामना किया और धैर्य और कौशल से षड्यंत्र और कुचेष्टाओं को बिफल कर दिया। बायजाबाई ने अपने सुशासन से प्रजाजनों पर सुकीर्ति की छाप बैठा दी। भूमि कर की समीक्षा की गई। स्थान स्थान पर भण्डारे की व्यवस्था की गई। उनके राज्य में कोई भूखा निराश्रित न रह पाए, यह उनका संकल्प था। अंग्रेज़ो की धूर्तता की काट करने में उन्होंने कूटनीतिक कौशल का परिचय दिया। उन्होंने चंदेरी पर आक्रमण कर फतह किया। आसपास के बुंदेलखंड के राज्यो पर विजय प्राप्त कर ग्वालियर राज्य की सीमा का विस्तार किया। उनकी उपलब्धि प्रजा, सामंतों और विरोधियों पर धाक जमाने बाली थी। युद्ध धर्मी मराठा मानसिकता उनके इकबाल की कायल हो गई।

जनकोजी शासन पर पूर्ण अधिपत्य चाह रहे थे और बायजाबाई उसे छोड़ने को तैयार नही थी। अंग्रेज़ भी बैजाबाई के व्यक्तित्व कृतित्व से परेशानी अनुभव करने लगे थे। अंततः उन्हें ग्वालियर छोड़ना पड़ा। इस निर्वासन काल का भी उन्होंने सकारात्मक उपयोग किया। यह उनके लिए आत्मबल को सुदृढ़ बनाने उपासना और तीर्थाटन के काम आया। बे धौलपुर आगरा होते हुए ब्रजमंडल पहुंची। वे बृन्दावन और गोकुल गई। यहां समस्त चतुर्वेदी परिवारों को दान दक्षिणा दी। बलदेव की यात्रा की। प्रयाग जाकर अन्नक्षेत्र स्थापित किया। इसके बाद बे नासिक, पंढरपुर और उज्जैन गई। बायजाबाई का पुण्य शीघ्र ही फलित हुआ। उनका काशी का खज़ाना 37 लाख रुपये का अंग्रेज़ो ने जब्त कर लिया था उन्हें बापस लौटा दिया गया। ग्वालियर राज्य से उन्हें 4 लाख रुपये की पेंशन स्वीकृत की गई। उज्जैन का मुहाल उन्हें व्यक्तिगत खर्च के लिए दिया गया। दौलत राव की मृत्यु के बाद बायजाबाई का निजी जीवन सादगी भरा और सुखोभोग विरत हो गया था।

वे सदैव जमीन पर सोई। राजकाज से शेष समय उन्होंने हरि स्मरण में लगाया। काशी विश्वनाथ मंदिर में ज्ञान वापी मण्डप तथा काशी में गंगा किनारे सिंद्धिया घाट उनके द्वारा ही बनबाया गया। तीर्थो में उनके द्वारा उनके द्वारा बनबाये गए मंदिर, धर्मशालाएं, घाट तथा अन्न सत्र आज भी उनकी कीर्ति कथा का बखान कर रहे है। उज्जैन का गोपाल मंदिर उनकी भक्ति का पावन स्मारक है। बायजाबाई ने अपनी नातिन चिमणा राजा का विवाह जयाजीराव से करबाया। 27 जून 1863 को लश्कर में उनका निधन हो गया। उन्होंने शान से शासन किया था और सम्मान के साथ अंतिम सांस ली। उनकी राजसी गरिमा आजीवन बनी रही। जहां तक शिंदेशाही की बात है बायजाबाई अद्वितीय सिद्ध हुई।

इतिहास के झरोखे से

पंचाल राज्य का गौरवशाली इतिहास

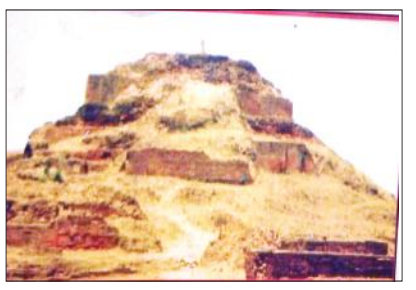

प्रो. गिरिराज नन्दन
इतिहासकार, आंवला, बरेली

बदायूं (इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति)

ज्ञान एवं साहित्य

मध्य एशिया के देशों से अनेक कवि, विद्वान बदायूं में आकर बसे जिसमें यहां आपकी सर्वत्र मान्यता है। की धार्मिक (दीनी) एवं सांस्कृतिक प्रतिष्ठा बहुत बड़ी। यहां शहाबुद्दीन 'महामारा' मौलाना जियाउद्दीन नखावी, मौलाना अलाउद्दीन उसूली काजी कमाल उद्दीन जाफरी मध्यकालीन भारत के बहुत ही उच्चकोटि के विद्वान हुए हैं। इन्होंने अनेक श्रेष्ठ ग्रंथों की रचना की जो उस समय के प्रसिद्ध मदरसों में पढ़ाए जाते थे। अकबर के काल में अब्दुल कादिर बदायूनी बहुत बड़े नामी कवि, लेखक एवं इतिहास कार हुए। उन्होंने रामायण, महाभारत एवं अथर्ववेद का फारसी में अनुवाद किया। वह बादशाह अकबर के दरबार में मनसबदार थे। अकबर द्वारा चलाए गए दीन-इलाही धर्म का उन्होंने विरोध किया था इसलिए उनसे जागीर छीन ली गई थी तब आखरी समय वह बदायूं आ गए। यहीं पर उनकी मृत्यु हुई।

बदायूं के सहसवान करने के उस्ताद निसार हुसैन खां ने बहुत प्रसिद्धि पायी। उनको भारत सरकार ने पद्म भूषण उपाधि से सम्मानित किया। मुंशी कल्याण राय बदायूं के कुंवरगांव कस्बे के निवासी बहुत प्रसिद्ध हुए हैं उन्होंने कल्याण तुरंग नामक आत्खण्ड पुस्तक की रचना की जो समस्त उत्तर भारत में प्रचलित हुई। भारत प्रसिद्ध शायर फानी बदायूंनी ने भी यहीं जन्म पाया। उनके सम्मान में बदायूं की एक रोड का नाम फानी रोड है। शकील बदायूंनी को जन्म देने का गौरव भी बदायूं को प्राप्त है। उन्होंने कई दीवान लिखे तथा बंबई में रहकर अनेक फिल्मों में गीत भी लिखे जो विश्व भर में प्रसिद्ध हुए। खान बहादुर मौलवी रजी उद्दीन बिस्मिल भी बदायूं की शान थे। जिन्होंने कन्जुततारीख तथा तजकिरातुल बासिलीन जैसी पुस्तकें लिखकर बदायूं के इतिहास को उजागर किया। बदायूं में इनके अतिरिक्त और भी अनेक कवि, शायर तय साहित्यकारों ने जन्म लिया है तथा इस जनपद की प्रसिद्धि को बढ़ाया है।

स्मारक

ईदगाह-यह बदायूं की सबसे पुरानी मुस्लिम इमारत है। इसको इल्तुतमिश ने अपनी सूबेदारी के समय में बनवाया था। यह लगभग तीन सौ फुट लंबी है।

जामा मस्जिद यह मस्जिद उस समय की भारत की बड़ी मस्जियों में से एक है। यह मौलवी टोला मोहल्ला में स्थित है। इसको इल्तुतमिश ने 1223 ई. में बनवाया था तथा तुगलक एवं मुगल काल में इसका पुनर्निर्माण कराया गया।

मखदूम-ए-आलम मस्जिद जंगी मस्जिद मकबरा एवं 'मस्जिद, मीरान मुलहिम शहीद मकबरा। इसी तुर्क काल के बने हुए है। बदरुद्दीन शाह विलायत के मकबरे का निर्माण 1390 ई. में नसरुल्ला के बेटे खिज ने करवाया था जो कि उस समय बदायूं का कोतवाल था। अकबर के शासन काल में इस इमारत का पुनर्निर्माण कराया गया तथा इसको सुन्दर बनाया गया।

खान की मस्जिद एवं हाफिज असादुल्ला की कब्र का निर्माण सुल्तान मुबारक शाह सय्यद के समय में हुआ था।

सुल्तान सय्यद अलाउद्दीन का रौजा का भी निर्माण सल्तनत काल में ही हुआ था। तथा आगे के समय में कई बार पुनर्निर्माण कराया गया।

मलिक-उल-शर्क इमादुलमुल्क का मकबरा दिल्ली के लोदी सुल्तानों के काल में निर्मित कराया गया। यह बदायूं के बड़े मकबरों में से एक है।

चिमनी का मकबरा अखलास खां की बहन का षठकोणीय मकबरा है।

रौजा जफर खां उर्फ शेख बुद्दन कुरेशी सिद्दीकी का निर्माण सूरी वंश के इस्लाम शाह के काल में 1550 ई. के लगभग कराया गया था।

इनके अतिरिक्त और भी पुराने स्मारक एवं अवशेष बदायूं में मौजूद है। बरेली रोड पर खेड़ा के निकट की मस्जिद रुकुनुद्दीन के समय की लगभग 1236ई. में बनी थी। दादा हमीद की मस्जिद नासिरउद्दीन के काल की 1250-51 ई0 की बनी हुई है। शेख फरीद, शेख उजाला, सैयद अहमद शाह एवं शेख जलाल के मकबरे मुगल बादशाह जहांगीर के काल में बने।

इखलास खां का रौजा शाहजहां के काल में तथा, खुर्मा (कादरी) मस्जिद मोहम्मद शाह (1726-28) के काल में निर्मित हुए। औरंगजेब के काल में अलापुर में भी मस्जिद बनवाई गई। यामहा खां की दरगाह इस्लाम शाह के समय तथा हैदर शाह की मस्जिद आदिल शाह के समय में बनीं। नासिरशाह का बाडा भी पुरानी इमारतों में है।

किंवदन्तियां

सहस्त्रबाहु का दुर्ग- नहसवान नगर के बारे में प्रसिद्ध है कि इसको राजा सहस्त्रवाहु ने बसाया था। महां एक किले के खण्डहर अब भी पाए जाते हैं। बजरिया काजी मोहल्ले को नो सड़क जाती है उसके दोनों ओर टीले उसके दुर्ग (किले) के टीले हैं। यहां से लगभग 6-7 मील दूरी पर जामनी आश्रम है। ऐसी मान्यता है कि प्राचीनकाल में यहां यमदग्नि ऋषि का आश्रम था। इन्हीं ऋषि के पुत्र परशुराम ने राजा सहस्त्रबाहु को मारा था। इस युद्ध के समय प्यास लगने पर परशुराम ने वाण (सर) मारकर जल स्रोत निकाला था जो आजकल सरसोता के नाम से मशहूर है।

नृत्य, प्रशस्य या निन्द्य एक विवेचना

आर्य सागर खारी
नोएडा

नृत्य एक कला है, भावों की अभिव्यक्ति का एक माध्यम है मूल कला के रूप में भारत के समाज में नृत्य कभी भी निंदनीय नहीं रहा। देशाचार से नृत्य की भिन्न भिन्न शैली भारत में प्रचलित रही हैं या हैं। भारत के विविध प्रांत व अंचलों में प्रचलित लोक नृत्य अधिकांश महिला प्रधान रहे हैं फिर भी महिलाओं के नर्तन को लेकर दक्षिण व पूर्वोत्तर भारत की अपेक्षा उत्तर भारत में कुछ सहज स्वीकार्य मानसिकता नहीं रही है। उत्तर भारत के कुछ इलाकों में प्रायः स्त्रियों का घर के बाहर खुले में नृत्य करना निंदनीय समझा जाता है जबकि गुजरात पूर्वोत्तर आदि राज्यों में महिलाएं गरबा आदि नृत्य जहां तहां कभी भी कर सकती हैं। पंजाब का गिद्दा नृत्य भी ऐसा ही है।

राजस्थान में प्राचीन काल से ही भील जनजाति की महिलाएं घूमर नृत्य करती थी जो सरस्वती देवी की उपासना का एक माध्यम था। इस नृत्य में महिलाएं घेरा बना कर घूम-घूम कर विशेष शारीरिक भाव भंगिमा से नृत्य करती हैं यह नृत्य भील जनजाति से निकल कर राजस्थान के लगभग सभी समाजों में विशेष तौर पर राजपूतों में आज विवाह के अवसरों पर प्रचलित है राजपूत परिवारों की महिलाएं पारिवारिक जनों व स्वजातीय समाज के अन्य जनों के सामने घूम-घूम कर नृत्य करती हैं यह एकल या सामूहिक किसी भी भांति से हो सकता है, ऐसा करना निंदनीय नहीं माना जाता।

वही गुर्जरों में जब नववधू बिहा करके आती है तो ससुराल में दूसरे ही दिन परिवार की बुजुर्ग महिलाएं उसके समक्ष गायन व नृत्य का अनुरोध करती हैं। नववधू की यह एक कलात्मक कौशल की परीक्षा ही होती है यदि वह परंपरागत गुर्जरी गायन और नृत्य में कुशल है तो वह महिलाओं की सराहना की पात्र बनती है। आज गुर्जरों में यह परंपरा सुरक्षित नहीं है आज कुछ भी गाकर कैसे ही नाच कर नववधू अपना पीछा छुड़ा लेती है।

आज इस प्रथा का स्थान कान फाड़ू संगीत पार्टी ने ले लिया है अन्य समाजों में भी ऐसा ही देखने सुनने को मिलता है। भारत के विभिन्न समुदाय की लोक परंपरा आज सिमट रही है।

भारत में नृत्य कभी भी अपनी मूल स्वरूप में निंदनीय नहीं रहा नहीं यह प्रतिबंध की विषय वस्तु रहा है जैसा इस्लाम में देखने सुनने को मिलता है। नृत्य अश्लील नहीं श्लील और भड़काऊ नहीं मर्यादित होना चाहिए। नृत्य कला के माध्यम से भावों का प्रदर्शन होता है इसमें देह प्रदर्शन का कोई स्थान नहीं होना चाहिए जब-जब इसमें देह प्रदर्शन प्रधान व भाव गौण हो जाता है, यह निंदा की श्रेणी में आ जाता है।

लेकिन एक काल भारत में ऐसा भी आया संयमित मर्यादित नृत्य होने के बावजूद उसे प्रतिबंधित किया गया महिलाओं के खुले में नृत्य करने को निंदनीय माना गया।

वैदिक विद्वान स्वर्गीय पंडित युधिष्ठिर मीमांसक जी के अनुसार-"मुसलमानों के भारत में शासन के समय उनकी कामुकता व महिलाओं के बलात अपरहण आदि के कारण ऐसा करना हिंदुओं के विभिन्न समुदायों के लिए आवश्यक हो गया था"। उत्तर भारत में विशेष कर पश्चिमी उत्तर प्रदेश हरियाणा राजस्थान मध्य प्रदेश के कुछ इलाकों में सार्वजनिक नृत्य विरोधी मानसिकता इसी काल में फली फूली। महिलाओं के लिए पर्दा प्रथा जैसी को कुप्रथा भी उसी काल में आई।

भारतीय प्राचीन धर्मसूत्रों में विद्यार्थी और राजा इन दोनों के लिए ही नृत्य देखना प्रतिबंध किया गया है, शेष अन्य सभी इस प्रतिबंध से मुक्त थे। राजवंशों में राजकुमारियों को गायन व नृत्य की भी शिक्षा दी जाती थी महाभारत में विराटनगर की राजकुमारी उत्तरा को अर्जुन ने छद्म नाम से ऐसे ही नृत्य की शिक्षा दी थी यह इसमें एक ऐतिहासिक प्रमाण है। आज तो किसी पर कोई भी प्रतिबंध नहीं है इंस्टाग्राम आदि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर हर घर में औसत एक नृत्यांगना अवश्य मिल जाएगी, वह नृत्यांगना कितनी कुशल है या अकुशल शिष्ट शालीन है या अशिष्ट यह में आपकी विवेक पर छोड़ता हूं। आज यदि भारतवर्ष का नवीन नामकरण 'नृत्यस्थान' के नाम से कर दे तो कोई हर्ज नहीं होगा।

निष्कर्ष यही निकलता है शालीन सभ्य भाव प्रधान नृत्य जो उचित अवसर पर किया गया हो उसके प्रदर्शन के पीछे उचित कारण हो वह कभी भी भारतीय समाज में निंदनीय नहीं रहा यदि ऐसा होता तो भारत मुनि नृत्य व गायन को लेकर नाट्य शास्त्र जैसा पंचम वेद के नाम से प्रचलित अमूल्य ग्रंथ क्यों कर रचते, जिसके दुनिया के ख्यातिलब्ध कलाकार आज भी कायल है।

विक्रमादित्य-मिथक या वास्तविकता

एस डी ओझा
इंजीनियर, बलिया

तुर्की का एक शहर है इस्ताम्बुल। इस्ताम्बुल के लाइब्रेरी "मकतब-ए-सुल्तानिया" में एक अति प्राचीन ऐतिहासिक ग्रंथ रखा गया है। इस ग्रंथ का नाम है "सायर-ऊल-ओकुल"। सायर-ऊल-ओकुल में विक्रमादित्य का जिक्र किया गया है। उसमें लिखा है -"वे लोग भाग्यशाली हैं, जो उस समय जनमे और राजा विक्रमादित्य के राज्य में जीवन व्यतीत किया। वह बहुत हीं दयालु, उदार और कर्तव्यनिष्ठ शासक था, जो हर व्यक्ति के कल्याण के बारे में सोचता था। उसने अपने पवित्र धर्म को हमारे बीच फैलाया। अपने देश के सूर्य से भी तेज विद्वानों को इस देश में भेजा ताकि यहां भी शिक्षा का उजाला फैल सके।"

विक्रमादित्य का शासन अरब व मिस्र तक फैला हुआ था। उन्होंने शकों को परास्त किया था। स्कंद पुराण और भविष्य पुराण में भी विक्रमादित्य का जिक्र आता है। वे गंधर्वसेन के पुत्र थे। उनके बड़े भाई का नाम भर्तृहरि था, जो बाद में योगी बन गए थे। विक्रमादित्य की राजधानी उज्जैन थी। कहते हैं कि उन्होंने 100 साल तक शासन किया था। वे छद्मवेश में अपने राज्य का औचक रात्रि भ्रमण किया करते थे ताकि प्रजा जनों के दुःखों से वाकिफ हो सकें।

विक्रमादित्य का मतलब सूर्य का पराक्रम होता है। उन्हें विक्रमार्क भी कहते हैं। बाद के दिनों में उनकी ख्याति से प्रभावित होकर अनेक राजाओं ने अपने नाम के साथ विक्रमादित्य लगाया। विक्रमादित्य एक पदवी हो गई। यह पदवी लगाने वाले श्री हर्ष, शूद्रक, हल, चंद्रगुप्त द्वितीय, हेमू शिलादित्य और यशोवर्धन थे। आज भी लोग अपने पुत्र का नाम विक्रम रखते हैं। उनके नाम से हीं विक्रम सम्वत चला था, जो आज भी पचांग बनाने या देखने के काम आता है। कहते हैं कि विक्रमादित्य ईसा के समकालीन थे।

विक्रमादित्य के पास बड़ी सेना थी। इतनी विशाल सेना तो आज अमेरिका और चीन को मिलाकर भी नहीं होगी। उनके साथ कई किवदंतियां लग गई हैं। कहते हैं कि वे अपना सिर काटकर देवी को चढ़ाया करते थे। वे बांस के सूराख से निकलने में भी कामयाब हो जाया करते थे। वे शनि जैसे कुपित देवता से भी दो दो हाथ कर चुके थे। उन्हें केन्द्र में रख "वेताल पच्चीसी" लिखी गई थी। विक्रमादित्य के हीं वंश परंपरा में राजा भोज आते थे। विक्रमादित्य के सिंहासन की खोज राजा भोज के हीं काल में की गई थी। इस सिंहासन में बत्तीस परियां जुड़ी हुईं थीं, जिन्होंने हर रोज राजा भोज को एक कहानी सुनाई थी। ये कहानियां "सिंहासन बत्तीसी" के नाम से मशहूर हुईं हैं।

विक्रमादित्य के नाम व काम को लेकर बहुत से इतिहासकार एक मत नहीं हैं। कई तो उनके अस्तित्व को हीं नकारते हैं। माना कि प्राचीन भारत में इतिहास लेखन की परंपरा नहीं थी, जिनसे कई विसंगतियों का जन्म हुआ है, पर हमारे वेद पुराणों में कई इतिहास छिपे पड़े हैं, जिन्हें उजागर करना अभी बाकी है। केवल काल तिथि के निर्धारण के अभाव में हम विक्रमादित्य को एक मिथक नहीं मान सकते।

फिरोजशाह तुगलक और अशोक की लाट

फिरोजशाह तुगलक को सम्राट अशोक की लाटों (स्तंभों) से बहुत प्यार था। इसीलिए उसने सम्राट अशोक की लाटें उखंडवा कर अपने महलों में लगवाई। वह सम्राट अशोक के दिखाएं रास्ते शांति पथ और बौद्ध धर्म पर तो नहीं चल सका किंतु उसने अशोक की लाट जरूर चुरा ली। फिरोजशाह तुगलक का नाम इतिहास में एक चोर बादशाह के तौर पर दर्ज होना चाहिए था किंतु पक्षपाती इतिहासकार इतना साहस नहीं जुटा पाए। फिरोज़ शाह तुगलक मोहम्मद बिन तुगलक का बेटा था। उसने फिरोज शाह कोटला का निर्माण करवाया और अंबाला और मेरठ क्षेत्रों से सम्राट अशोक की दो लाटें उखड़वा कर दिल्ली मंगवा ली और अपने फिरोज शाह कोटला में लगवाई।

शिवचरण चौहान
कानपुर

43 मीटर ऊंची और 23 टन वजनी सम्राट अशोक की इन लाटों में ब्राह्मी लिपि में आज भी उनके संदेश खुदे हुए हैं। जिसे फिरोजशाह तुगलक तमाम प्रयासों के बावजूद भी हटा नहीं पाया था। सन 1398 के आसपास तैमूर लंग ने दिल्ली पर हमला किया और इस तरह तुगलक वंश का नामोनिशान दिल्ली से मिट गया। बाद में लोदी वंश के सिकंदर लोदी ने दिल्ली में शासन किया।

आज के हिसार शहर की आधारशिला फिरोजशाह तुगलक ने रखी थी ऐसा कहा जाता है। उसने दो गांवों बड़ा लारस छोटा लारस को मिलाकर हिसार ए फिरोजा का नाम दिया। फारसी में हिसार को किला कहते हैं। इसलिए हिसार में फिरोज शाह तुगलक का किला था। आज हिसार हरियाणा के एक विकसित शहर है और स्टील सिटी के रूप में विख्यात है। राष्ट्रीय राजमार्ग 9 पर स्थित है। आज के हरियाणा बस स्टैंड के सामने हिसार ए फिरोजा बना दिखाई देता है। इस किले के अंदर एक स्तंभ है जो फिरोज शाह स्तंभ के नाम से जाना जाता है किंतु वास्तव में यह अशोक की लाट है। पुरातत्व विभाग ने इसको प्रमाणित किया है। फिरोजशाह तुगलक ने अशोक की लाट में थोड़ा बहुत परिवर्तन करके इसे अपना स्तंभ का नाम दिया और इसे फिरोजा स्तंभ कहा जाने लगा। इस स्तंभ का एक टुकड़ा अभी भी अलग से रखा हुआ है जिस से प्रमाणित होता है कि यह सम्राट अशोक की लाट है। इस स्तंभ के पीछे एक सुंदर गुंबद नुमा भवन बना हुआ है ऊपर से लाल तथा नीचे से पीले चूने बलुआ पत्थर से बनाया गया है अब इसके ऊपर प्लास्टर किया गया है। मस्जिद तुगलक काल का नमूना है मस्जिद के नीचे तहखाना है जिसमें अधिक गर्मी के समय फिरोज़ शाह तुगलक और उसके करीबी लोग विश्राम करते थे। इसके पास एक नहर है जो सूख गई है। यह एक तीन मंजिला भवन है इसको देखने के लिए पर्यटक आते हैं।

आज हिसार दिल्ली से पश्चिम की ओर 164 किलोमीटर दूर राष्ट्रीय राजमार्ग 9 पर स्थित है। पहले पंजाब में अब हरियाणा का हिस्सा है हिसार। कभी हिसार के पास घग्घर और दृष दृंती नदियां बहती थीं। अनुमान लगाया जाता है कि आज हिसार की आबादी साढ़े तीन लाख के करीब है किंतु कभी हिसार दो छोटे गांवों बड़ा लारस और छोटा लारस के रूप में बसा था। यहां जाड़े में अधिक जाड़ा और गर्मी में अधिक गर्मी पड़ती है। फिरोजशाह तुगलक को इन गांवों के चौरस मैदान पसंद आ गए और उसने यही पर दिल्ली के अलावा यहां भी अपना किला बनवाया जिसे हिसार ए फिरोजा कहा जाता है। व्याकरणाचार्य पाणिनि के अष्टाध्यायी ग्रंथ में इस गांव का नाम इसुकार मिलता है। जिसे इतिहासकार भी मानते हैं। फिरोजशाह तुगलक ने अग्रोहा कस्बे में खड़ी अशोक की लाट लाकर यहां पर स्थापित की थी और अपना किला, महल और मस्जिद बनवाई थी। सन 1354 से 1356 तक जब फिरोज़ शाह तुगलक ने हिसार की स्थापना की थी तो उसका नाम हिसार ए फिरोजा रखा था अकबर के शासनकाल में इसका नाम सिर्फ हिसार रह गया। कहते हैं 1783 के अकाल में हिसार बिल्कुल उजड़ गया था और फिर काफी दिन बाद आबाद हुआ।

हिसार का हड़प्पा कालीन इतिहास में भी उल्लेख मिलता है और कहा जाता है कि यह स्थान बहुत महत्वपूर्ण था। अब पुरातत्व विभाग जो खोज कर आ रहा है उसमें राखीगढ़ी के टीले का उत्खनन प्रमुख है। राखी गढ़ी के टीले से कुछ ऐसी चीजें मिली हैं जिससे पता चलता है कि हिसार हड़प्पा कालीन सभ्यता से भी पहले से प्रागैतिहासिक काल में भी विकसित जगह थी। राखीगढ़ी टीले का उत्खनन कई नए रहस्य खोलेगा।

राखीगढ़ी के अलावा अग्रोहा और अन्य कई कस्बों के पास बने टीलों में जो कभी इंसान की आबादी रही होंगी यहां भी खुदाई चल रही है और कई रहस्य सामने आने वाले हैं। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में हिसार के लोगों का बहुत बड़ा योगदान है और अंग्रेजों ने उन पर बहुत अत्याचार किए थे। अनेक निर्दोष लोगों को गोली से उड़ाया था और फांसी दी थी। हिसार ने इतिहासकार, वास्तुकार लेखक, कवि, कलाकार, पहलवान राजनेता खिलाड़ी आदि राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर के दिए हैं। अंग्रेजों ने हिसार को बड़ा पशुपालन केंद्र बनाया था और हिसार आज भी पशुपालन/प्रजनन के लिए जाना जाता है।